सत्यमेव जयते

अनुभूति

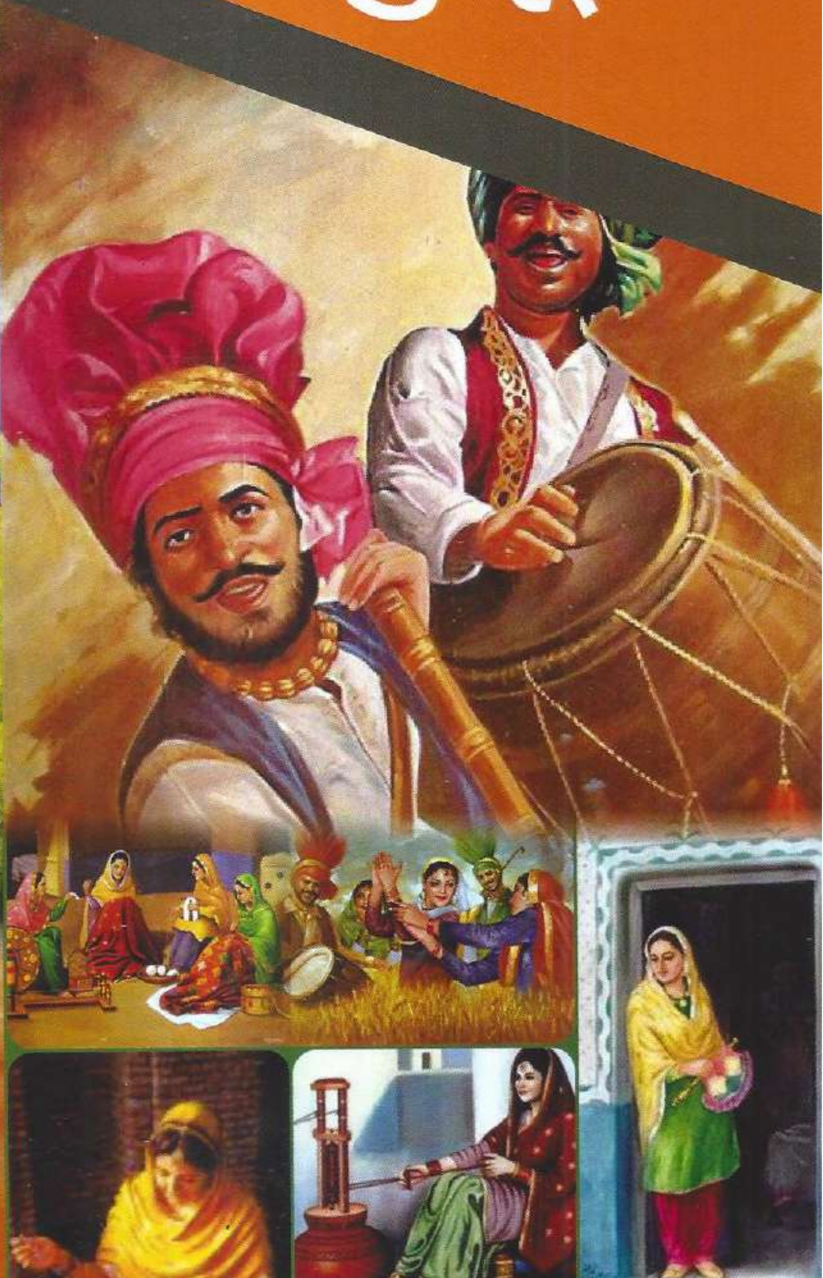

अंक 7

वर्ष 2023–2024

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जालन्धर।

संयुक्त हिन्दी कार्यशाला

संरक्षक
श्रीमती कोमल जोगपाल
प्रधान आयकर आयुक्त
एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा
कार्यान्वयन समिति, जलंधर

सम्पादक
श्रीमती सुषमा गुप्ता
सहायक निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र,
जालंधर एवं सचिव, नगर राजभाषा
कार्यान्वयन समिति, जालंधर

सम्पादकीय सहयोग व संपर्क सूत्र
श्रीमती अलका नरूला
सहायक निदेशक, राजभाषा
आयकर कार्यालय, जालंधर

श्री सतीश अरोड़ा
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
आयकर कार्यालय, जालंधर
व
सह सचिव, नराकास,
जालंधर

क्रमांक	विषय वस्तु	पृष्ठांक
1	सरंक्षक की कलम से	1
2	संपादकीय	2
	काव्यसरिता	
3	चांदनी में...........मृग-तृष्णा	3
4	स्वर्ग धरती...हरी दीवाली की धूप	4
5	जिन्दगी की सच्चाई...तरसती आँखें	5
6	वर्तमान में हिन्दी.......हिन्दी हमारी शान	6
7	यारो मत तकरार......परींदों का मजहब	7
8	प्यारी बिटिया......जाग्रत	8
9	कविता.................कविता	9
	लेख व कहानी संग्रह	
10	विश्व रेडियो दिवस	10-13
11	सफलता क्या है	14
12	नाश की जड़ है अहंकार	15
13	मैं सिद्धांत हूँ	16
14	जब सम्राट अशोक ने	17
15	संगति का प्रभाव	18
16	मैं सड़क हूँ	19
17	अपनी अलग पहचान	20
18	छोटी-छोटी बातें	21
19	श्लोक का अर्थ	22
20	कोई भी फैसला सोच-समझकर लो	23
21	सफलता के लिए जरूरी है मेहनत	24
22	ठहराव	25
23	गृहस्थी जीवन में प्रेम प्यार	26
24	प्यार की राह पर	27-28
25	अब पछताए होत क्या	29-30
26	राजभाषा हिन्दी	31-35
27	चुटकुले	36
28	शब्दों के बदलते रूप	37
29	संक्षिप्त कार्यालय टिप्पणियां	38
30	गंड वाला कुर्ता	39

सत्यमेव जयते

कोमल जोगपाल
प्रधान आयकर आयुक्त व अध्यक्ष,
नराकास, जालन्धर

संरक्षक की कलम से

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जालन्धर की पत्रिका " अनुभूति" का सातवा अंक आपके करकमलों में सौंपते हुए मैं अपार हर्ष का अनुभव कर रही हूँ। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा रचनात्मक एवं प्रेरणात्मक लेखों का इस पत्रिका में संयोजन किया गया है। भारत सरकार के राजभाषा हिन्दी के लक्ष्यों के उत्तोत्तर वृद्धि में सक्रिय सहयोग हेतु जालन्धर स्थित कार्यालयों और कर्मचारियों का हार्दिक धन्यवाद करती हूँ।

हम सभी जानते हैं कि संघ की राजभाषा हिन्दी का सरकारी कामकाज में प्रयोग करना तथा उसके विकास एवं प्रचार-प्रसार के लिए सार्थक प्रयत्न करना हमारा संवैधानिक दायित्व है।

मैं सभी लेखकों/रचनाकारों को पत्रिका में सहयोग देने हेतु आभार प्रकट करती हूँ। मुझे विश्वास है कि हिन्दी पत्रिका अनुभूति के इस अंक के सभी लेख रचनात्मक ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणात्मक होंगे और इसके माध्यम से हिन्दी का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार होगा। मैं कामना करती हूँ कि हमारे उपयोगी और सार्थक प्रयास हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सहयोगी सिद्ध हो।

शुभ कामनाओं सहित

(कोमल जोगपाल)
प्रधान आयकर आयुक्त व अध्यक्ष,
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जालन्धर

सत्यमेव जयते

सुषमा गुप्ता
सहायक निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, जालंधर एवं
सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जालन्धर

सम्पादकीय

संसार में दो तरह के व्यक्ति होते हैं। एक वे जो कार्य करते हैं, दूसरे वे जो श्रेय लेते हैं।

हमें प्रथम कोटि में आने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि वहाँ स्पर्धा कम है। बहुत कम ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनकी, 'कथनी' और 'करनी' एक समान हो । प्रायः अपनी सुविधानुसार हम परिभाषाओं को अनुकूल बना लेते हैं फिर बात चाहे घर-परिवार की हो या कार्यक्षेत्र की।

वस्तुतः इसका मूलकारण हमारी स्वार्थान्धता है। 'वसुधा एव कुटुम्बकम्' की भावना लुप्त होती जा रही है। 'हम' से 'मैं' तक पहुँचा व्यक्ति इतना एकाकी हो चुका है कि उसकी लेखनी भी यहीं तक सीमित होकर रह गई है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम जो भी लिखें, स्वस्थ व स्वच्छ विचारों सहित लिखें, उस पर मलिनता की परत न जमने पाए।

पत्रिका में ऐसे ही विषयों को समाहित करने का प्रयत्न किया गया है। हम अपने प्रयत्न में कहाँ तक सफल हुए हैं, यह हमें बताएँगे आपके पत्र, आपके अमूल्य सुझाव।

पत्रिका का यह अंक राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की ओर एक कदम बढ़ाने का प्रयासमात्र है- जिसमें उन सभी का योगदान है जिन्होंने इस पत्रिका हेतु लिखा और उन सबका भी जिन्होंने इसे परिष्कृत करने हेतु हमारा मार्गदर्शन किया, आप इस सफर में हमारे साथ हैं इस आशा सहित,

(सुषमा गुप्ता)
सहायक निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, जालंधर एवं सचिव,
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जालन्धर

नोट : पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं। सम्पादक मण्डल का उनके दृष्टिकोण से सहमत होना आवश्यक नहीं।

आस्था

(चांदनी में लिखी कविता)

चांद देता है गवाही
कि एक आस्था पर
टूट टूट कर
बिखरे हैं
अनगिनत अविश्वास।

पर वह
वैसे ही स्थिर है
क्योंकि
इन शून्य नयनों की
सूनी मांग में
आशा की लाली भरी तो
इस आस्था के ही करों ने।

जिस तरह
शर्वरी की गोद
भर देते हैं
मधुरिम स्वप्न
पर छेड़ देते हैं
निद्रा की काया
और खो जाते हैं।

इसी तरह
आस्था के साज में
उत्पीड़न से तारों को
झनझना
स्वर्णिम संगीत में
लुप्त हो जाते हैं
अविश्वास के कर।

मृग-तृष्णा

बांध लो इस अबाध तृष्णा को
जो मारीचिका जैसी
सम्मोहित कर
उच्छृंखल भागा करती है
अविरल और अनन्त।
कुछ नहीं होता उपलब्ध
फैली शुष्क रेत के सिवा
जिसे पानी समझ
भागते रहते हो
तृषित व आतुर
अनबुझ पिपासा लिए।

तलाशना है तो तलाश लो
एक बिन्दु
स्वयं के ही भीतर
सर्च लाइट सा
जो करता ज्योतिर्मय
संकरे
कंटीले रास्ते
ले जाता उस छोर
जहां है अमृत
व सम्पूर्णता
एवं पूर्ण शान्ति का पासार।

-प्रोमिला अरोड़ा

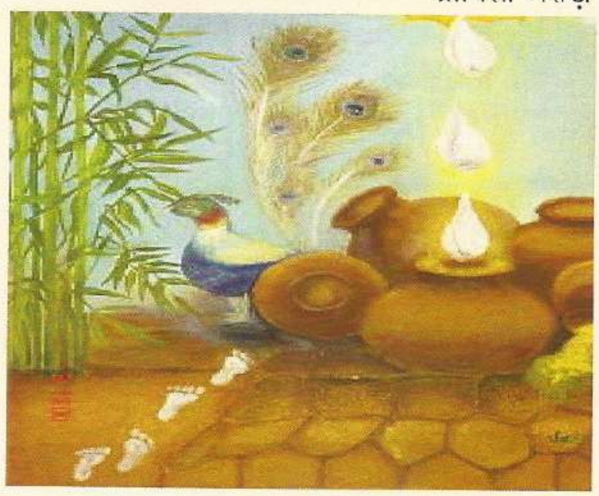

स्वर्ग धरती का

स्वर्ग धरती का जिसे लोग कहते है,
हम उसी सरजमीं पर रहते है !!
कोशिशे लाख कि पडोसी ने इसे मिटाने की,
जिसे हम सारे वादी-ए-काश्मीर कहते है!
स्वर्ग धरती ....

जम्मु को जाम्बुलोचन ने था बसाया,
काश्मीर को कश्यप ऋषि ने था बचाया,
शेर और वकरी एक ही घाट पे पीए थे पानी,
यह किस्सा दादा जी ने था सुनाया,
काश्मीर को धरती का स्वर्ग,
और जम्मू को मन्दिरों का शहर कहते है,
स्वर्ग धरती ....

यह वह पावन धरती है,
जहां झेलम और तवी कल कल बहती है,
चरारे शरीफ़ हो या हो रघुनाथ,
शकंराचार्या हो या हो बावा अमरनाथ,
मां वैष्णो के दर्शन के बाद,
दर्शन बाबा भैरों के किया करते हैं,
स्वर्ग धरती ....

इस धरा को आचं न आने देगें हम,
किसी गैर के पड़ने नही देगें कदम,
जिस ने भी आखें उठा कर देखा,
घर मे घुस कर मारेगें हम,
मातृ भूमि कि खातिर जान भी दे देगें हम,
देश पे मिटने वालो को ही सच्चे वीर कहते है,
स्वर्ग धरती ....

हरी दीवाली की धूप

धूप खाई नहीं जा सकती आज
सूंघी जाएगी
दीवाली है आज,
धूप खाई जा सकती है आज, जैसे चाय
हलक से सीधा नीचे उतार।
धूप के कई स्वाद है-
सर्दियों में गचक,
गर्मियों में मरच
जाड़ों में मेवा,
बरसातों में देवा।
पहाड़ों पर धूप दो-फाड़ हो जाती है,
जैसे चीकू
उजली और भूरी,
दो पुरुषों में बँट जाती है-उत्तम और मध्यम।
धूप छिलके वाली चीनी बन जाती है धुंध में
दीवाली के दिन धूप को याद करना एक नेमत है।
जवान चिलम फूँकते, उनके पास कोक भी है
उनके लिए धूप की कोई जात,
कोई उमर नहीं
दीवाली की रात,
आज पटाखे बनेंगे धूप के
हरी दीवाली वाली धूप हरी है।

-डॉ जसबीर चावला

कविता

जिन्दगी की सच्चाई

इस दुनिया की नाट्यशाला में,
हर व्यक्ति कलाकार है,
यही एक सच्चाई है, बाकी सब बातें बेकार है।
हर किसी का अपना-अपना अभिनय होता है,
किसी का अभिनय बड़ा और किसी का छोटा होता है।
अभिनय समाप्त होते ही सबको लौट जाना है,
मिट्टी से बने इंसान को अंत में मिट्टी में मिल जाना है।
खाली हाथ आते हैं सब और खाली हाथ जाते हैं,
फिर मानव जन्म लेकर इतना क्यों इतराते हैं।
मौत तो अटल सच्चाई है, इसे झुठलाया नहीं जा सकता,
जो इंसान एक बार चला जाए,
उसे वापिस लाया नहीं जा सकता।
मौत की नहीं होती किसी से रिश्तेदारी,
ये सब को ले जाती है अपने द्वार बारी-बारी।
इस सत्य से वाकिफ हो जाए अगर मानव,
तो दुनिया से मिट जाएगा अहंकार का दानव।
जिन्दगी की यही सच्चाई है,
जाएगी साथ वही जो की नेक कमाई है।
अंत में इन पंक्तियों के साथ कविता को विराम देती हूँ:-
'जमा कर लो जितनी भी धन -दौलत,
करके तुम धोखा और फरेब।
पर एक बात हमेशा याद रखना ए मानव,
कि कफ़न में नहीं होती जेब,
कि कफ़न में नहीं होती जेब।

वन्दना ठाकुर
सुपुत्री श्री रमेश ठाकुर,
निरीक्षक (सेवानिवृत्त) लुधियाना

तरसती आँखें

वृद्धाश्रम के हर बजुर्ग की आँखों में
इन्तज़ार नजर आता है,
ढूंढ रही है हर आँख अपने बेटे को
कि आएगा और उन्हें वापिस घर ले जाएगा।
मैं पूछती हूँ कि क्यों इन बजुर्गों को
वृद्धाश्रम बिठाया गया,
क्या महंगाई इतनी बढ़ गई कि
बेटे से दो वक्त का खाना न खिलाया गया।
या फिर बेटा पैदा करने की सज़ा मिली है इन्हें
फूलों की सेज पर सुलाते थे ये जिन्हें।
क्यों भूल जाते है बेटे कि
ये वही माँ-बाप है,
जिन्होंने ऊँगली पकड़कर चलना सिखाया था,
खुद तंगी काटकर तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल बनाया था।
आज वही माँ-बाप लगने लगते है¢ बोझ,
जो बेटे की खुशी के लिए प्रार्थना करते है¢ रोज।
माँ-बाप को वृद्धाश्रम भेजने वालो,
वृद्धाश्रम को अपने अनुकूल बनवा लो,
क्योंकि बुढ़ापा तुम्हें भी आना है,
आज तुमने छोड़ा माँ-बाप को वहां,
कल को बेटे ने तुम्हें भी वहीं ले जाना है।
कल को बेटे ने तुम्हें भी वहीं ले जाना है।
'ये जिन्दगी का खेल ऐसे ही चलता है,
जो जैसा करता है, वो वैसा ही भरता है।

वर्तमान में हिंदी की दशा

अपने देश में हम पराये हो गये,
हिंदी माँ को छोड़कर मदर के हो गये ।
पहले पापा फिर डैडी हो गए ।
हिंदी की बिंदी को हटाकर सब जीरो हो गये ।
गांधी की टोपी छोड़कर सब हीरो हो गये ।

कौन कहता है कि हम आज़ाद हो गये,
अंग्रेजों से छूटकर अंग्रेजी के गुलाम हो गये ।
ब्रिटिश नेता विदेशों में हिंदी पढ़ रहे हैं,
भारत माँ के सपूत अंग्रेजी के भाषण झाड़ रहे हैं ।

अंग्रेज़ नहीं रहे अंग्रेजी राज कर रही है,
हिंदी तो बस गलियों में फरियाद कर रही है ।
सौतन बनकर आई अंग्रेजी अब महारानी हो गई,
हिंदी रानी तो अपने ही घर में बेगानी हो गई ।

हिंदी हमारी शान

हिंदी हमारी मर्यादा,
हिंदी हमारी शान है ।
हिंदी से है हिन्दोस्तां,
हिंदी से जीवन प्राण है ।
हिंदी का मान करें,
हिंदी में सर्जना करें ।
हिंदी में राजकाज हो,
यह धर्म है विज्ञान है ।
हिंदी हो बोलचाल में,
और गति नृत्य ताल में ।
सरल, मधुर, सुबोध यह,
प्राचीन है पुराण है ।

अरबिन्दर कौर सैनी
निरीक्षक कार्यालय संयुक्त आयकर आयुक्त केन्द्रीय
रेंज ,जालंधर

यारो मत तक़रार करो

छोटी छोटी बातों पर, यारो मत तक़रार करो
पल भर के इस जीवन में तुम, छोड़ो नफ़रत प्यार करो
यारो मत तक़रार करो ....!

इस धरती पर हम सब ही, उस मालिक की सन्तान हैं
कितने भी हो जाएँ ज्ञानी, पर कल से अनजान हैं
जूझ रहे हैं आपस में हम, मूरख हैं नादान हैं
अब तो यारो सँभल भी जाओ, दो पल के मेहमान हैं

अपनों को दु:ख मत पहुँचाओ, थोड़ा सा उपकार करो
यारो मत तक़रार करो ....!

उस मालिक ने अपनी ख़ातिर, ये संसार रचाया है
जिसकी महिमा का हम सबने, अब तक पार न पाया है
डोरी अपने हाथों में ले, हर पल हमें नचाया है
हम सब उसके खेल खिलौने, उसकी ही सब माया है
उसके आगे चले न अपनी, करो समर्पण धीर धरो
यारो मत तक़रार करो ....!

वक्त का पहिया हाथ उसी के, एक वही आधार है
हम सबकी साँसों का यारो, 'माही' बस हक़दार है
सुख साधन ये हँसी ठिठोली, उसके ही सब रूप हैं
उसके सारे काम अनौखे, अदभुत हैं क्या ख़ूब हैं
भेद मिटाकर, ऊँच नीच का, सबकी तुम जा पीर हरो
यारो मत तक़रार करो ....!

–डॉ. प्रतिभा माही

परिंदों का मज़हब

परिंदों का नहीं कोई मज़हब होता
बेख़ौफ़ उड़ते हैं बेख़ौफ़ चुगते हैं
पौधों का भी नहीं कोई मज़हब होता
बेपरवाह ख़िलते हैं बेख़ौफ़ उगते हैं
यह फूल नहीं हिंदू होते
यह फ़ल भी नहीं मुसलमान होते
हम में ही क्यों फ़र्क़ है
हम क्यों नहीं इन्सान होते
पौधों में नहीं कोई ब्राह्मण होता
बाग़ों में नहीं कोई दलित होता
ऊँच-नीच मज़हब छोड़ कर
हम क्यों नहीं इन्सान होते
मज़हब नहीं बैरी बनाता
फिर क्यों हम झगड़ते हैं
मज़हब के नाम पर ही
मरते और लड़ते हैं
हम ही क्यों हैवान हैं
हम क्यों नहीं इन्सान होते
यह पक्षी नहीं हिंदू होते
परिंदे नहीं मुसलमान होते
मज़हब नहीं सिखाता हैवानियत
हम क्यों नहीं इन्सान होते

डा. राजेश्वर अरोड़ा,
कपूरथला

कविता : प्यारी बिटिया

मेहंदी रोली , कंगन का सिंगार नही होता।
रक्षा बँधन , भईया दूज का त्योहार नहीं होता।
रह जाते हैं वो घर सूने आँगन बन कर।
जिस घर मे बिटिया का अवतार नहीं होता।

घर आने पर दौड़ कर जो पास आये उसे कहते हैं बिटिया ।।
थक जाने पर प्यार से जो माथा सहलाए उसे कहते हैं बिटिया ।।
कल दिला देंगे" कहने पर जो मान जाये उसे कहते हैं बिटिया ।।
हर रोज़ समय पर दवा की जो याद दिलाये उसे कहते हैं बिटिया ।।

घर को मन से फूल सा जो सजाये उसे कहते हैं बिटिया ।।
सहते हुए भी अपने दुख जो छुपा जाये उसे कहते हैं बिटिया ।।
दूर जाने पर जो बहुत रुलाये उसे कहते हैं बिटिया ।।
पति की होकर भी पिता को जो ना भूल पाये उसे कहते हैं बिटिया ।।

मीलों दूर होकर भी पास होने का जो एहसास दिलाये उसे कहते हैं बिटिया ।।
अनमोल हीरा" जो कहलाये उसे कहते हैं बिटिया ।।

कृष्ण कुमार सैनी
कर सहायक, केन्द्रीय रेंज, जालन्धर

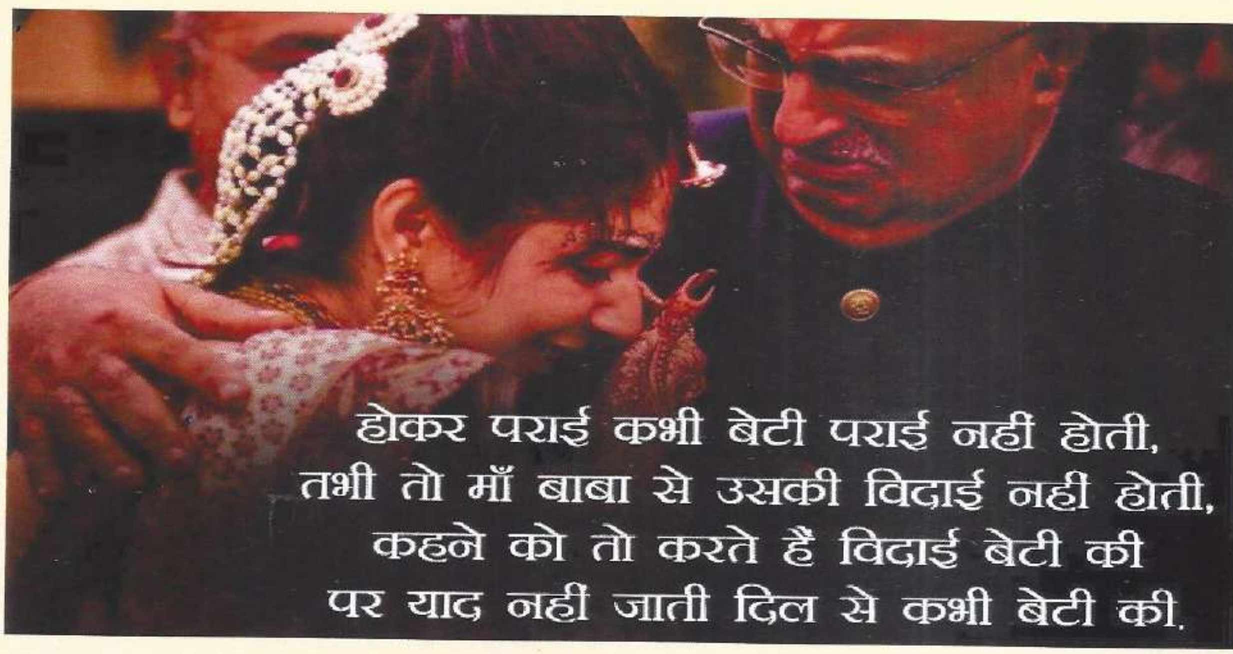

कविता

ग़म मुझको सहला देता है
मीठी नींद सुला देता है
झलक ख़ुशी की एक दिखाकर
बच्चे सा बहला देता है
सच्ची झूठी बातें दिल की
चिहरा सब बतला देता है
नाम तेरा है चंदन जैसा
दिल मेरा महका देता है।
ख़ारों के साए में भी वो
देखो फूल खिला देता है
खवाबों में वो जब भी आए
सोए दर्द जगा देता है
चाँद बड़ा है ज़ालिम 'सागर'
तेरी याद दिला देता है

कविता

चिराग़-ए-मुहब्बत जलाओ तो अच्छा
जो रंजिश को दिल से भुलाओ तो अच्छा
अभी तुमको बढ़ना है आगे
ही आगे ये अरमान सोए जगाओ तो अच्छा
मिलाते रहे हाथ से हाथ लेकिन
कभी दिल से दिल को मिलाओ तो अच्छा
तेरे आगे झुक जाएगा आस्माँ भी
क़दम जो ज़मीं पर टिकाओ तो अच्छा
न बदनाम होने दो खुद को जहां में
मुझे बेमुरव्वत बनाओ तो अच्छा
वो टूटा हमेशा जो झुकता नहीं है
मेरे यार खुद को झुकाओ तो अच्छा
बना देगी जख्मों को नासूर दुनिया
इन्हें इस जहाँ से छुपाओं तो अच्छा
सवेरे की लाली बिखरने लगी है
न सपने नयन में बुलाओ तो अच्छा
दिलों से निकाली ये नफरत का 'सागर'
गले सबको अपने लगाओ तो अच्छा

सागर सूद
पटियाला

विश्व रेडियो दिवस : स्मृतियां आकाशवाणी की

शायद कुछ ही लोगों को पता होगा कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने 13 फरवरी को विश्व रेडियो दिवस के रूप में घोषित किया है क्योंकि यह प्रस्ताव मात्र कुछ साल पुराना है। 1946 में इसी दिन संयुक्त राष्ट्र संघ रेडियो स्थापित किया गया और देर से ही सही साधारण से लगने वाले रेडियो को अंततः उसका गौरवमयी दर्जा मिला। इस पहल ने करोड़ों श्रोताओं को बहुत सस्ते रिसीवर सेट के माध्यम से जुड़ने में अभूतपूर्व मदद की और इसलिए आधुनिक युग में इस सूचना एवं मनोरंजन अर्थात इंफोटेनमेंट जगत का मुख्य प्रजा तंत्रीय स्थापक होने का श्रेय दिया जा सकता है। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में जो फैराडे और मैक्सवेल जैसे भौतिक शास्त्रियों द्वारा विद्युतचुम्बकीय तरंगों के सिद्धांतों और प्रयोगों की उत्साहवर्धक शुरुआत की गई वो अपने चरम उत्कर्ष पर तब पहुंची जब हर्ट्ज (याद है 'मेगाहर्ट्ज'?), बैनली, टेस्ला, डी मूसा, बॉन और अन्य विशिष्ट मार्गदर्शकों ने दर्शाया कि वेतार टेलीग्राफी वास्तव में संभव है। नवम्बर 1894 में हमारे देश के जगदीश चन्द्र बोस ने कलकत्ता में बिना किसी तार को जोड़े अक्षरशः एक घंटी बजाकर दिखाई जबकि छः महीने बाद ही 7 मई 1895 (रशिया का "रेडियो दिवस") को एलेग्जेंडर पोपोव नें पहला रेडियो सेट तैयार कर दिखाया । लेकिन मारकोनी ने ही सबसे पहले मार्च 1897 में पेटेंट हासिल किया, अपनी ब्रिटिश मारकोनी कंपनी स्थापित की और साथ साथ आईल ऑफ वाइट में विश्व का पहला रेडियो स्टेशन स्थापित किया. यह इतालवी जीवन में बहुत दूर गामी और त्वरित सोच रखने वाला नागरिक था और 1909 में उसने भौतिक शास्त्र में कार्ल ब्रॉन के साथ नोबेल पुरूस्कार प्राप्त किया। किन्तु वो तो कैलिफोर्निया का सेन जोस ही था जिसने विश्व को दर्शाया की वो ही "सिलिकॉन वैली" बनने के लिए नियति में निर्धारित था जब उसी वर्ष चार्ल्स हेरोल्ड ने पहला वास्तविक क्रियाशील रेडिय स्टेशन बना डाला ।

एक किसान का पुत्र होने के कारण वह हाथों से बीजों के विस्तृत बिखराव यानि "ब्रॉड कास्टिंग" विधि से परिचित था और उसने यही शब्दावली हमें दूर संचार प्रणालियों के लिये भी दी। बड़ी जल्दी रेडियो तकनीक जहाजों की जीवन रेखा बन गई, विशेष रूप से संकट के समय में और जैसे कि अपेक्षायें थी, इसका समुचित विकास प्रथम विश्व युद्ध के दौरान युद्ध सैनिकों के साथ संवाद स्थापित करने के लिये हुआ।

जैसे ही युद्ध समाप्त हुआ इसका असैनिक प्रयोग बढ़ने लगा और अगस्त 1920 जेंटिना के एक स्टेशन ने स्थाई रुप से मनोरंजन कार्यक्रमों का प्रसारण शुरु किया और डेट्राइ शेगन ने समाचार बुलेटिन प्रसारित किया जिसे पहले समाचार बुलेटिन के रूप में जाना जाता है।

विशिष्ट अमेरिकी व्यापारिक समझ से प्रेरित होकर पिट्सवर्ग में के. डी. के. ए. ने 2 नवम्बर 1920 को राष्ट्रपति के चुनावी नतीजों से प्रसारण की शुरुआत करते हुए, विज्ञापन आधारित प्रसारण सेवा के आगमन का बिगुल बजाया। इसके बाद तो कई अन्य अमेरिकी प्रसारक आये किंतु बी. बी. सी को अपने प्रथम प्रसारण को आरम्भ करने के लिये 14 नवम्बर 1922 तक दो वर्ष और इंतजार करना पड़ा।

विशिष्ट सरकारी तौर-तरीकों के चलते, महा डाकपाल ने अनुज्ञापत्र पर हस्ताक्षर करने में कुछ महीने लगा दिए किन्तु बी.बी.सी अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर पहले से ही समर्पित हो चुका था और उसने संपूर्ण ब्रिटेन में अपनी सेवाओं का विस्तार शुरु कर दिया। 1926 की समाचार पत्रों की आकस्मिक हड़ताल ने उसे एकमात्र उपलब्ध माध्यम के रूप में अभूतपूर्व लोकप्रियता दिलाई और रेडियो का अब अवतरण हो चुका था।

रेडियो प्रसारण के क्षेत्र में भारत भी बहुत पीछे नहीं था। जब बी. बी. सी प्रगति की रफतार पकड़ रहा था, तब बंबई ने 1923 में अपना रेडियो क्लब शुरू किया और 1924 में मद्रास के प्रेसिडेंसी क्लब ने अपनी रेडियो व्यवस्था प्रारम्भ की। ये शुरुआती साहसिक प्रयास कुछ छोटे हलकों तक ही प्रसारण कर पाते थे, किंतु वर्ष 1926 के आते-आते कुछ उद्यमी व्यापारी बंबई में

एकत्रित हुये और उन्होंने भारतीय प्रसारण कंपनी (आई. बी. सी.) की स्थापना की। आई. बी. सी. ने 23 जुलाई 1927 में पहला समुचित रेडियो स्टेशन बंबई में स्थापित किया और दूसरा 26 अगस्त को कलकत्ता में।

चूँकि लाइसेंसधारी रेडियो मालिकों की कुल संख्या मात्र तीन हजार थी, मार्च 1930 में कंपनी को बंद करना पड़ा। तब तक भारत की ब्रितान्वी सरकार को रेडियो का महत्व समझ में आ चुका था और उसने बी बी सी के संस्थापक महानिदेशक जॉन रीथ का सुझाव मान लिया जो की 1923 से एक के बाद एक आने वाले सभी वॉयसरायों को लोकसेवा प्रसारण के गुणों को समझाने के असफल प्रयास कर रहे थे।

ब्रितानवी क्राउन ने फिर तुरंत अप्रैल फूल के दिन, 1930 में, बीमार कंपनी की संपत्ति को लिया और भारतीय राजकीय प्रसारण सेवा (आई.एस.बी.एस.) का गठन अपने अधे हुआ। उसके अभिभावक विभाग, श्रम एवं उद्योग ने रिसीवर सेट्स पर ड्यूटी कर बढ़ा कर नई सेवा की लागत की भरपाई करने के प्रयास किये।

दिसंबर 1932 में बी.बी.सी की शाही सेवा का भारत में विस्तार किया गया किन्तु वस्तुस्थिति में ठोस सुधार तब आया जब रीथ ने अगस्त 1935 में लाइनेल फील्डन को प्रसारण नियंत्रक के नव स्थापित कार्यालय का कार्यभार संभालने के लिए भेजा।

''अति प्रतिभावान किन्तु अविवेकी.....उच्च कोटि का सृजनशील और जिसे व्यवस्था अरुचि व असंतोष से देखती हो''.....इन सभी अलंकरणों को अक्षरश: साबित करने वाले फील्डन अपने कार्य के प्रति किसी देव्य शक्ति वाले मानव की तरह जुट गए अपनी कुछ रूखे ''मुझे करना ही है अंदाज वाली कार्यशैली के चलते कई हलकों में खलबली मचाते हुए, उन्होंने जनवरी 1938 में दिल्ली को किंग्सवे कैंप में अपना रेडियो स्टेशन दिया।'' मैं सचिवों और उपसचिवों के खतरनाक ढंग से झगड़ता हूँ ''उन्होंने लार्ड कीथ के समक्ष अपना दर्द रखा,'' और मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि मैं अन्यथा और क्या कर सकता हूँ। व्यवस्था को चाहिए था एक साधारण, सरकारी मीडिया किन्तु फील्डन ने भारत की आवाज, उन्होंने जैसी सुनी, उसे वैसा ही प्रसारित करने के लिए जी तोड़ कोशिश की। जब उन्होंने राजदरबार के जाने माने आलोचक, वैरियर एल्विन को रेडियो पर साम्राज्य दिवस पर (जी हाँ साम्राज्य दिवस पर) बोलने के लिए आमंत्रित किया, तब उन्होंने अपने कई कट्टर दुश्मन, परन्तु भारतीयों में कई दोस्त बना लिए। उसी वर्ष 8 जून को 'आई.एस.बी.एस. को 'ऑल इंडिया रेडियो% नाम दिया गया जिसका 1938 में, कलकत्ता की शार्ट वेव सेवा के उदघाटन हेतु टैगोर ने अपनी लिखी कविता द्वारा पुन: नामकरण किया –'आकाशवाणी' यानी वह वाणी जो आकाश के मार्ग से आती है।

एक साल में द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया और ब्रिटेन को भारत में तुरंत सक्रिय होना था क्योंकि शार्ट वेव पर नाज़ी प्रचार तेजी से फैल रहा था। भारत में समाचार बुलेटिनों का केन्द्रीयकरण पहले ही हो चुका था और प्रादेशिक सेवाओं को भी दिल्ली से ही तैयार आलेख दिए जाते थे। यह प्रथा आज भी जारी है। आज प्रादेशिक सेवाओं की संख्या बढ़कर 27 हो चुकी है। यहां, एक रोचक प्रसंग याद आता है जब 3 सितम्बर 1942 को भारत छोडो आंदोलन में सिर्फ कुछ ही दिनों के भीतर एक ''कांग्रेस रेडियो'' स्थापित कर दिया गया था।

''भारत में ही कहीं से'' चलने का दावा करने वाला और पुलिस के साथ चूहे बिल्ली का खेल खेलने वाला चलता फिरता रेडियो स्टेशन अपनी जगह बदलता रहता था। लेकिन 11 नवंबर को स्वतन्त्रता सेनानियों का युवा हर गतिविधियों में पकड़ा गया और बम्बई के पुलिस कमिश्नर ने राम मनोहर योजना का जिम्मेदार ठहराया।

जब ब्रितानवी हकूमत ने भारतीय सीमाओं से पलायन किया उस समय ऐ. आई.आर. के पास चार मेट्र शहर अलचेरापल्ली सहित केवल 6 स्टेशन थे जबकि मैसूर, त्रावणकोर, हैदराबाद औरंगाबाद रियासती के अपने 4 स्टेशन थे। उस समय 32 करोड़ 25 लाख ज़्यादा की आवाज के लिए मात्र ढाई लाख रिसीवर सेट्स ही उपलब्ध थे।

यह सब जल्दी ही बदलने वाला था क्यूंकि नेहरू ने नए भारत के, जिसे चर्चिल ने अनकता के कारण जल्द विघटन% होने की

भविष्यवाणी कर दी थी, एकीकरण के लिए रेडियो को ही अपनी वरीयताओं में रखा था। 1961 तक रेडियो स्टेशनों की संख्या लगभग तिगुनी हो गयी और 1981 तक लगभग 100 केंद्र 9 करोड़ से ज्यादा रेडियो रिसीवर्स के लिए प्रसारण कर रहे थे। आज आकाशवाणी के 409 केंद्र हैं जिसमे से 212 ऐसे हैं जिनमे अपने स्टूडियो हैं और कुछ घंटों से लेकर 24X7 अपने कार्यक्रमों का निर्माण करते हैं। इसके अतिरिक्त 193 रिले केंद्र हैं जो मुख्यधारा के आकाशवाणी कार्यक्रम, विविध भारती, एफ एम रेनवो एफ एम गोल्ड, और स्थानीय बहुउद्देशीय रेडियो स्टेशन के कार्यक्रमो को रिले करते हैं। आज जबकि शार्ट वेव समाप्ति की ओर हैं और मध्यम वेव स्थिर है तरंगों में ?फ एम का अधिपत्य हो चुका है और आकाशवाणी के 587 ट्रांसमीटर्स में से 387 एफ एम हैं और हर महीने इनमें इजाफा हो रहा है। ये मोबाइल हैंडसेट पर बहुत साफ सुनाई देते हैं और इनकी संख्या जल्द ही एक अरब का आंकड़ा छूने वाली है, लेकिन ?फ एम का दायरा अभी काफी सीमित है।

आकाशवाणी की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक है विविध भारती सेवा जो अक्टूबर 1957 में रेडियो सीलोन के आरम्भ होने के 5 वर्षों के बाद शुरू हुई और जल्द ही उसने उप महाद्वीप के हिंदी फिल्म संगीत प्रेमियों के बीच जबरदस्त पैठ बनाने में कामयाबी हासिल कर ली। आकाशवाणी के संरक्षण का पूरा श्रेय तत्कालीन सूचना व प्रसारण मंत्री डॉ. बी. वी. केसकर को जाता है जिन्होंने न केवल शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा दिया, जिसने असंख्य व अनुपम रूप से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने आकाशवाणी पर घटिया व अशोभनीय फिल्मी गानों का प्रसारण प्रतिबंधित भी किया।

विविध भारती ने मात्र कुछ ही वर्षों में रेडियो सीलोन को पीछे छोड़ दिया और साथ ही भारत को एकजुट करने में अपनी भूमिका भी निभायी। अधिकाँश भारतीओं ने उत्तराधिकार स्वरुप प्राप्त अपने अपने धर्म, भाषा व प्रांतीय मतभेदों का नवनिर्मित अखिल भारतीय, सार्वभौम राष्ट्रीय पहचान के छन्द विलय कर डाला।

के विरोध के बावजूद इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि हिंदी फिल्म संगीत बुद्धिजीवियों एक सांस्कृतिक कड़ी के रूप में स्थापित हुआ और आज वह न केवल आम नागरिक के ऊपरी तबके की मिलीजुली भावनात्मक विरासत बन चुका है। सस्ते कैसेट- की बलर्[टेप के आने से कई दशक पूर्व आकाशवाणी की विविध भारती सेवा ही थी जिसने न केवल भारतवासियों को मंत्रमुग्ध रखा बल्कि उन चंद लोगों के एकाधिकार से भी मुक्ति दिलाई जं सिनेमा के महंगे टिकट खरीद सकते थे या मंहगे ग्रामोफोन रिकार्ड्स हासिल कर सकते थे, आकाशवाणी तो सड़क चलते आम आदमी की फिल्म संगीत और गंभीर समाचार बुलेटिनों के आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति के लिए कृतसंकल्प थी।

किन्तु आकाशवाणी की प्रतिबद्धता इससे भी कहीं अधिक थी और आज भी है उसके पारा रेडियो नाटक, रेडियो वार्ताएं, रूपक, भारी मात्रा में शास्त्रीय संगीत प्रश्नोतरी एवं विद्यालय आधारित कार्यक्रमों का भण्डार ही नहीं बल्कि बेशकीमती रेडियो यनि लेखागार भी है जिसका संपूर्ण सदुपयोग करना अभी शेष है। भारत की हरित क्रांति में आकाशवाणी और दूरदर्शन की अप्रैल 1976 से पूर्व संयुक्त रूप से और उसके बाद आकाशवाणी से पृथक होने के बाद भी अहम भूमिका रही है। आकाशवाणी ने स्वतंत्रता से पूर्व प्रचलिए ''सामुदायिक श्रयण'' को एक कदम और आगे बढ़ाते हुए ''ग्रामीण प्रसारण'' को भी अपनाया और उसे वह सब कुछ देकर सुदृढ़ किया जो किसान की मूलभूत आवश्यकता थी जैसे गौराम का हाल, कृषि बाजार भाव, कृषि सुझाव, पशु पालन, स्वास्थ्य एवं साफ सफाई आदि। 1980 तक सामुदायिक रेडियो रोट्स की कुल संख्या 50,000 तक पहुँच गयी थी और 1980 के आखिरी वर्षों में वाल्य आधारित रेडियो सेंट्स की बैटरी और ऊर्जा सम्बन्धी समस्यायों का अंत होने जा रहा था और ट्रांजिस्टर क्रान्ति ने भारत को बदल दिया था।

1980 के वर्षों के दो युद्धों ने आकाशवाणी को देश को एकजुट कर प्रेरित करने का एकमात्र अनोखा अवसर प्रदान किया। भारत जो 1947 में अंग्रेजों के 14 पृथक प्रांतों और 585 रियासतों में बटा हुआ था, 1962 में बर्फीली चोटियों में लड़ते सैनिकों के पीछे एक चट्टान की तरह उठ खड़ा हुआ।

विविध भारती ने सेना के जवानों के मनोवल के उत्साह वर्धन के लिए अपना एक कार्यक्रम "जयमाला" आरम्भ किया जिसमें नर्गिस, लता, आशा, मुकेश, नौशाद, मन्ना डे आदि फिल्म जगत की जानी मानी हस्तियों ने अग्रणीय भूमिका निभायी। उसके बाद तो कभी न भुलाये जाने वाले कार्यक्रमों की झड़ी लग गयी जैसे: इंस्पेक्टर ईगल, बॉर्न वीटा क्विज कांटेस्ट, फिल्मी मुकद्दमा, अंताक्षरी, मनचाहे गीत, संगीत सरिता, छाया गीत आदि आदि।

हमें ये भी याद रखना चाहिए की आकाशवाणी ने वास्तव में सत्यनिष्ठा से अपने नाम को सार्थक करते हुए कभी भी गायकों और कलाकारों, जैसे गुलाम अली, मेहदी हसन, नुसरत और राहत फतेह अली मोहसिं खान, मीरा, मोनालिसा, शफकत अली खान, आबिदा परवीन, अदनान सामी और अन्य में भेदभाव नहीं किया। उसकी रेडियो तरंगों ने उन सभी आत्माओं को संगीत और साझा इतिहास के सूत्र में पिरो दिया जिन्हे "दो कौमी नजरिया" राजनीती ने भिन्न कर दिया था।

"साभार"

सफलता क्या है

4 वर्ष की उम्र में सफलता यह है कि आप अपने कपड़ों को गीला नहीं करते।

8 वर्ष की उम्र में सफलता यह है कि आप अपने घर वापिस आने का रास्ता जानते है।

12 वर्ष की उम्र में सफलता यह है कि आप अपने अच्छे मित्र बना सकते है।

18 वर्ष की उम्र में मदिरा और सिगरेट से दूर रह पाना सफलता है।

25 वर्ष की उम्र तक नौकरी पाना सफलता है।

30 वर्ष की उम्र में एक पारिवारिक व्यक्ति बन जाना सफलता है।

35 वर्ष की उम्र में आपने कुछ जमापूंजी बनाना सीख लिया यह सफलता है।

45 वर्ष की उम्र में सफलता यह है कि आप अपना युवावस्था बरकरार रख पाते हैं।

55 वर्ष की उम्र में सफलता यह है कि आप अपनी जिम्मेदारियाँ पूरी करने में सक्षम हैं।

65 वर्ष की आयु में सफलता है निरोगी रहना।

70 वर्ष की उम्र में सफलता यह है कि आप आत्मनिर्भर हैं किसी पर बोझ नहीं।

75 वर्ष की उम्र में सफलता यह है कि आप अपने पुराने मित्रों से रिश्ता कायम रखे हैं।

80 वर्ष की उम्र में सफलता यह है कि आपको अपने घर वापिस आने का रास्ता पता है।

और 85 वर्ष की उम्र में फिर सफलता ये है कि आप अपने कपड़ों को गीला नहीं करते।

अंततः यही तो जीवन चक्र है.. जो घूम फिर कर वापस वहीं आ जाता है जहाँ से उसकी शुरुआत हुई है और

यही जीवन का परम सत्य है।

लेकिन असली सफलता है अपने निजघर वापस जाना

हमने यह जन्म क्यों लिया है..ताकि भगवान को पाकर हम अपना ये जन्म सफल कर सके और सफलता

पूर्वक अपने भगवान में लीन हो जाये....यही जीवन की असली सफलता है।

अंजु बाला

प्रेरणात्मक
नाश की जड़ है अहंकार

एक समय की घटना है एक बूढ़े आदमी ने अपनी बहुत सी सम्पत्ति अपने पुत्र के नाम कर दी। उसने अपनी वसीयत में लिखा कि उसकी सारी सम्पत्ति उसके मरने के बाद उसके पुत्र की हो जाएगी। और वसीयत करने के कुछ दिन बाद ही उसकी मृत्यु हो गई।

सम्पत्ति इतनी अधिक थी कि उसका पुत्र और आगे आने वाली सात पुश्तें तक भी आराम से बैठे-बैठे बिना कोई काम-धंधा किए खा-पी सकती थीं। मगर उसका पुत्र अभी भी सतुष्ट नहीं था! वह अधिक से अधिक धन कमाना चाहता था।

इसलिए उसने अपनी सभी अचल सम्पत्ति बेच दी और भिन्न-भिन्न वस्तुओं की खरीद-फरोख्त कर उनका व्यापार करना आरंभ कर दिया। भाग्यवश वह बहुत कम समय में अत्यधिक सफल हुआ तथा शीघ्र ही पहले से अधिक धनवान हो गया।

उसने इतना अधिक धन इकट्ठा कर लिया कि दूसरे व्यापारी उससे ईर्ष्या करने लगे। कभी-कभी दूसरे व्यापारी या उसके मित्र उससे उसकी सफलता का रहस्य पूछते तो वह कहता मैं इसलिए उन्नति कर रहा हूं कि मैं अपने धंधे को समझता हूं और कठोर परिश्रम करता हूं।

मैं अपने ग्राहकों को भी खुश रखना जानता हूं। चूंकि उसने सचमुच व्यापार में तरक्की की थी इसलिए उसके मित्र और अन्य व्यापारी उसकी शेखीबाजी को सच मानते थे। अपनी इस कामयाबी के कारण उसमें बड़ा ही अहंकार आ गया था।

मगर उसे फिर भी अपने धन से संतुष्टि नहीं थी! वह अभी भी बहुत-सा धन कमाना चाहता था। उसने व्यापार में अपने हाथ-पैर फैलाने आरंभ कर दिए। आरंभ में तो उसे व्यापार में लाभ हुआ। मगर उसका अहंकार इतना बढ़ गया था कि भाग्य की देवी उससे अप्रसन्न हो गई।

उसे व्यापार में घाटा होने लगा। पहली घटना तब हुई जबकि माल से भरा उसका समुद्री जहाज डाकुओं ने लूट लिया। दूसरी घटना में माल से लदा जहाज अरब सागर में डूब गया। उसके भाग्य में कुछ न कुछ अपशकुन उत्पन्न हो गया था। तीसरी घटना ने उसे बिस्कूल ही उखाड़ फेंका।

वह दर-दर का भिखारी बन गया। उसका सारा व्यापार चौपट हो गया। उसकी यह दुर्दशा देखकर उसके मित्रों ने पूछा, भाई तुम्हारी यह दुर्दशा आखिर हुई कैसे इस पर उसने अपने भाग्य को कोसा और कहा "क्या बताऊं किस्मत ने साथ नहीं दिया! भाग्य की देवी उसकी बात सुनकर अप्रसन्न हो गई।

वह साक्षात उसके सामने प्रकट होकर बोली : तुम सचमुच बहुत अकृतज्ञ हो। जब तक तुम सफलता की सीढ़ियां चढ़ते रहे तब तक तुम उसका सारा श्रेय खुद लेते रहे मगर जैसे ही हालात खराब हुए तुमने भाग्य को धिक्कारना आरम्भ कर दिया। याद रखो मनुष्य की कृत्घनता तथा उसका अहंकार ही उसे ले डूबता है।

निष्कर्ष: अहंकार से व्यक्ति का सर्वनाश हो जाता है।

मैं सिद्धांत हूं

(एक व्यंग्य रचना)

वह भी एक समय था जब मुझे गर्व होता था कि मैं संसार के सभी विश्वविद्यालयों में अलग-अलग सिद्धांतों के नाम से पढाया जाता हूं। लेकिन, आज मेरा भारतीय रूपए की भांति प्रति-दिन अवमूल्यन हो रहा है। बात यहीं तक रहती तब भी ठीक था। आजकल राजनेताओं ने तो मेरा चौबीसों घंटे द्रोपदी की भांति चीरहरण करना शुरू कर दिया है। मेरा प्रयोग वे अपनी सुविधानुसार और अपनी हर करतूत को सही सिद्ध करने के लिए करते हैं। मुझे तब बहुत अधिक पीड़ा और ग्लानि होती है जब इसका प्रयोग वे जनता के हित में बताने लिए करते हैं। अक्सर आपने भी सुना होगा कि यह सिद्धांतों की लड़ाई है! यह विचारधारा की लड़ाई है। जबकि, जहां ये होते हैं वहां वास्तव में न कोई विचार होता है न कोई धारा होती है| होता है तो सिर्फ कुर्ता,कुर्सी और सुविधा की राजनीति। चौक गये न आप कुर्ता सुनकर। मान्यवर कुर्ता इसलिए क्योंकि वैज्ञानिक जल के बिना मानव का अस्तित्व तो किसी न किसी दिनसंभव कर देंगे| लेकिन, कुर्ते के बिना खानदानी नेता की छवि कल्पना से भी परे है। माननीय बनने के रास्ते की शुरुआत इसी से होती है।

दूसरी ओर हमारे सिद्धांत परिवार में हम सब का अपना-अपना अस्तित्व एवं मान-सम्मान है। लोकतंत्र का बहाना बनाकर हम न एक-दूसरे के घरों में घुसते हैं न एक दूसरे के घरों को तोड़ते हैं। हम सभी एक दूसरे का पूरा सम्मान करते हैं। सिद्धांत परिवार में सभी खानदानी और कट्टर ईमानदार होते हैं। हम लोगों में न ऊंच-नीच का भेद होता है न छोटे-बड़े का संघर्ष! फिर भी क्यों भला मुझे बारंबार यह सुनकर अपमानित होना पड़ता है कि यह 'सिद्धांतों की लड़ाई' है! आप ही बताइए भला सिद्धांतों की भी कभी लडाई होती है? ऐसे राजनेता हमें बेवजह बदनाम करते हैं। अब हर रोज मुझे अपनी लाज बचाना मुश्किल हो रहा है। वे जब से मेरा प्रयोग सुविधा शब्द के पर्यायवाची के रूप में करने लगे हैं तब से तो मुझे अपने अस्तित्व पर ही धिक्कार हो रहा है! अब मेरा एक ही निवेदन है कि कृपया मुझे असंसदीय शब्द के रूप में वर्गीकृत कर दें ताकि मेरे चीरहरण पर कुछतो लगाम लग सके। कुछ तो लगाम लग सके।

अनिल त्रिपाठी 'बेबाक'
सहायक निदेशक (राजभाषा)
आयकर कार्यालय, नागपुर

जब सम्राट अशोक ने मंत्री को बताई सिर की कीमत

एक बार सम्राट अशोक अपने मंत्री के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक भिखारी दिखा। सम्राट रथ से नीचे उतरे और उस भिखारी के सामने सिर झुकाकर फिर आगे बढ़े। मंत्री को यह अच्छा नहीं लगा। उसने कहा महाराज! आप इतने बड़े सम्राट हैं आपको एक भिखारी के सामने शीश नवाना क्या शोभा देता है सम्राट ने कहा इसका जवाब मैं कल दूंगा।

अगले दिन सम्राट ने एक झोली में तीन सिर डलवा कर मंत्री को सौंपे और बोले इन्हें बेच आओ। झोले में एक सिर भैंसे का एक बकरी का और एक मनुष्य का था। मंत्री पूरे दिन इधर-उधर घूमता रहा परंतु कोई भी तीनों सिर खरीदने को तैयार नहीं हुआ। मंत्री ने आकर सम्राट को कहा महाराज कोई भी सिर खरीदने के लिए तैयार नहीं है।

सम्राट ने आज्ञा दी, "इन्हें मुफ्त में बांट दो।" इस बार मंत्री जी भैंसे और बकरी का सिर तो बांट आए किंतु मनुष्य का सिर कोई भी लेने को तैयार नहीं हुआ। लोगों का कहना था कि गाय और बकरी का सिर तो फिर भी काम आ जाएगा आदमी का सिर लेकर क्या करेंगे

मंत्री जब थक-हार कर दरबार में लौटा और सम्राट को पूरी बात बताई तो उन्होंने मुस्कराकर कहा यही तो आपके कल के प्रश्न का उत्तर है। अब आप ही बताएं कि जिस सिर का कोई उपयोग नहीं उसे सज्जन लोगों के सामने झुकाने में क्या अड़चन है सम्राट होने का यश भी तो क्षणिक ही है। प्रेम व सम्मान तो हमारे जीवन में सदैव बना रहता है। सम्मान देने से सम्मान बढ़ता है और अमीर-गरीब ऊंच-नीच का भेद तो सम्मान की मूल भावना का ही लोप कर देता है। तात्पर्य यह है कि प्रतिष्ठा का अहंकार सिवाय असम्मान के कुछ नहीं देता जबकि दूसरों को प्रेम व सम्मान देने से बदले में खुद भी सम्मान की प्राप्ति होती है। मंत्री को अपने सवाल का जवाब मिल चुका था।

संगति का प्रभाव

अच्छी संगति और अच्छे विचार इंसान की प्रगति का द्वार खोल देते हैं। संगति इंसान के जीवन में बहुत महत्व रखती है। अगर आप बुरी संगति में हो तो आप कितने भी बुद्धिमान क्यों न हों, लेकिन आप कभी भी जीवन में आगे नहीं बढ़ पाएंगे। वही अगर आप अच्छे लोगों की संगति में हैं तो आपको बड़ी-बड़ी समस्याएं भी छोटी लगने लगेंगी। ऐसी ही एकसच्ची घटना है अल्बर्ट आइंस्टीन की। अल्बर्ट आइंस्टीन महान वैज्ञानिक थे जिन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान दिया है। एक बार आइंस्टीन रैलेटिविटी नामक फिजिक्स के टॉपिक पर रिसर्च कर रहे थे। इसी के चक्कर में वह बड़ी-बड़ी यूनिवर्सिटीज और कॉलेज में जाते थे और लोगों को लैक्चर देते थे। उनका ड्राइवर उनको बहुत बारीकी से देखा करता था।

एक दिन एक यूनिवर्सिटी में सैमीनार खत्म करके आइंस्टीन घर लौट रहे थे। अचानक उनके ड्राइवर ने कहा, "सर, जो आप रैलेटिविटी पर यूनीवर्सिटी में लैक्चर देते हो, यह तो बहुत आसान काम है, यह तो मैं भी कर सकता हूँ।" आइंस्टीन ने हंसते हुए कहा, "ओके, चिंता न करो, तुम्हें एक मौका ज़रूर दूँगा।

फिर अगले दिन जब आइंस्टीन नई यूनीवर्सिटी में लैक्चर देने गए तो उन्होनें ड्राइवर को अपने कपड़े पहना दिए और खुद ड्राइवर के कपड़े पहन लिए। फिर ड्राइवर से लैक्चर देने को कहा। उस बिना पढ़े-लिखे ड्राइवर ने बिना किसी दिक्कत के बड़े-बड़े प्रोफैसरों के सामने लैक्चर दिया। किसी को पता ही नहीं चला कि वह आइंस्टीन नहीं है।

लैक्चर खत्म होते ही उस यूनीवर्सिटी के एक प्रोफैसर ने आइंस्टीन बने ड्राइवर से कुछ सवाल पूछे तो इस पर ड्राइवर ने हंसकर कहा, "बस इतना आसान सवाल, इसका जवाब तो मेरा ड्राइवर ही दे देगा।" अब ड्राइवर बनकर पीछे बैठे हुए आइंस्टीन आगे आए और सारे सवालों का जवाब दिया। बाद में आइंस्टीन ने सबको बताया कि लैक्चर देने वाले शक्स वह नहीं बल्कि उनका ड्राइवर है तो वहां बैठे सभी प्रोफैसरों ने दांतों तले उंगलियां दबा लीं। किसी को यकीन नहीं हुआ कि जो रैलेटिविटी बड़े-बड़े प्रोफैसरों को समझ नहीं आती, इस ड्राइवर ने उसे कितनी आसानी से दूसरों को समझाया है। इसे कहते हैं संगति का असर, आइंस्टीन के साथ रहकर एक बिना पढ़ा ड्राइवर भी इतना बुद्धिमान हो गया।

सतीश अरोड़ा
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, आयकर कार्यालय जालन्धर

मैं सड़क हूँ

मैं सड़क हूँ मुझपर चलते वीर अनेक और पथिक कोई छोटे-कोई बड़े!

क्या अफसर , क्या अमीर और क्या गरीब| क्या नेता और क्या अभिनेता, अपराधी से लेकर न्यायाधीश तक और चोर से लेकर पुलिस तक| सब पहुंचते मंजिल पर अपने-अपने सामर्थ्य के बल पर तो कोई सरकार के बल पर|

वैसे तो मेरे जन्म के बाद कई वर्षों तक कोई मेरी सुध न लेता और जब कोई लेने आता केवल लोकल अनेस्थेसीया लगाता और मरहम पट्टी करके चला जाता|

जैसे तैसे सप्ताह भी नहीं बीतता कि मरहम पट्टी के नीचे ढंका जख्म फिर खुलने लगता और मैं फिर इंतजार करने लगती लोकल अनेस्थेसीया और छोटी-मोटी चीर-फाड़ का|

मेरी ऐसी किस्मत कहाँ कि मैं देखूँ ख्वाब नई नवेली दुल्हन की तरह सजने-सँवरने के! जब कभी बीसों साल में किसी महामहिम को जब मेरा सहारा लेना पड़ता है तबतो मुझे पुनर्विवाह का अनुभव होता है ! लेकिन, मेरी यह खुशी भी चिरस्थाई नहीं रहती| हल्की सी बरसात की बूंदे क्या गिरी कि मेरी चमड़ी शरीर को ऐसे छोड़ने लगती जैसे सांप के शरीर से केंचुली| इस स्थिति में जहां सांप का तो एक प्रकार से पुनर्जन्म होता है वहीं मेरे तो अस्थि पंजर बिखरने लगते हैं और मैं क्षतविक्षत अवस्था में अपने दुर्भाग्य को कोसने लगती हूँ| मेरे भाई की ही किस्मत देखिए जिसका नाम कर्तव्य पथ है| उसे न कभी फोड़ा हुआ, न फुंसी| एकदम ऐसा जैसे मक्खन में नहाया हो| ऐसा क्यों होता है भला?सरकार तो यहां भी है और वहां भी| वही रूपया -वही पैसा और इंसान वहाँ भी और यहाँ भी| फिर ऐसा भीषण भेदभाव क्यों? कर्तव्य पथ तो अपने भाग्य पर इठलाता है और हमें मुह चिढ़ाता है|

अनिल त्रिपाठी 'बेबाक'
सहायक निदेशक, नगर राजभाषा
कार्यान्वयन समिति, नागपुर

प्रेरणात्मक
अपनी अलग पहचान बनाने के लिए हर पल मेहनत करें

अंग्रेजी के विश्वविख्यात लेखक जॉर्ज बर्नार्ड शॉ बेहद हंसमुख और मिलनसार थे। कई बार वह अपनी हाजिरजवाबी और सटीक टिप्पणी से लोगों को चमत्कृत कर देते थे। उनकी लोकप्रियता इतनी ज्यादा थी कि वह जहां भी जाते लोग उन्हें घेर लेते थे। एक बार वह किसी कॉलेज के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे। जब कार्यक्रम समाप्त हुआ तो हमेशा की तरह उनसे ऑटोग्राफ लेने वालों की भीड़ लग गई। एक नौजवान ने ऑटोग्राफ बुक उनकी ओर बढ़ाते हुए कहा सर मुझे साहित्य का बहुत शौक है और मैंने आपकी सभी पुस्तकें पढ़ी हैं। आप मेरे प्रिय लेखक हैं।

मैं अपने जीवन में अभी तक अपनी अलग पहचान नहीं बना पाया हूं लेकिन बनाना चाहता हूं। मैं क्या करूं इसके लिए आप मुझे कोई संदेश देकर अपना हस्ताक्षर करें तो बहुत मेहरबानी होगी।

बर्नाड शॉ नौजवान की बात पर मुस्कराए फिर उन्होंने उसके हाथ से हस्ताक्षर पुस्तिका ली और उस पर संदेश लिखकर हस्ताक्षर किया और पुस्तिका लौटा दी। नौजवान ने पुस्तिका खोलकर देखा तो हैरान रह गया। बर्नाड शॉ ने लिखा था अपना समय दूसरों के हस्ताक्षर इकट्ठा करने में नष्ट न करें बल्कि खुद को इस योग्य बनाएं कि दूसरे आपके हस्ताक्षर प्राप्त करने के लिए लालायित रहें। अपनी अलग पहचान बनाने के लिए हर पल मेहनत करना और संघर्षरत रहना आवश्यक है। यह पढ़कर नौजवान ने कहा सर मैं आपके इस संदेश को जीवन भर याद रखूंगा और अपनी एक अलग पहचान बनाकर दिखाऊंगा। इस पर जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने नवयुवक की पीठ थपथपाई और भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी।

राजभाषा कक्ष से

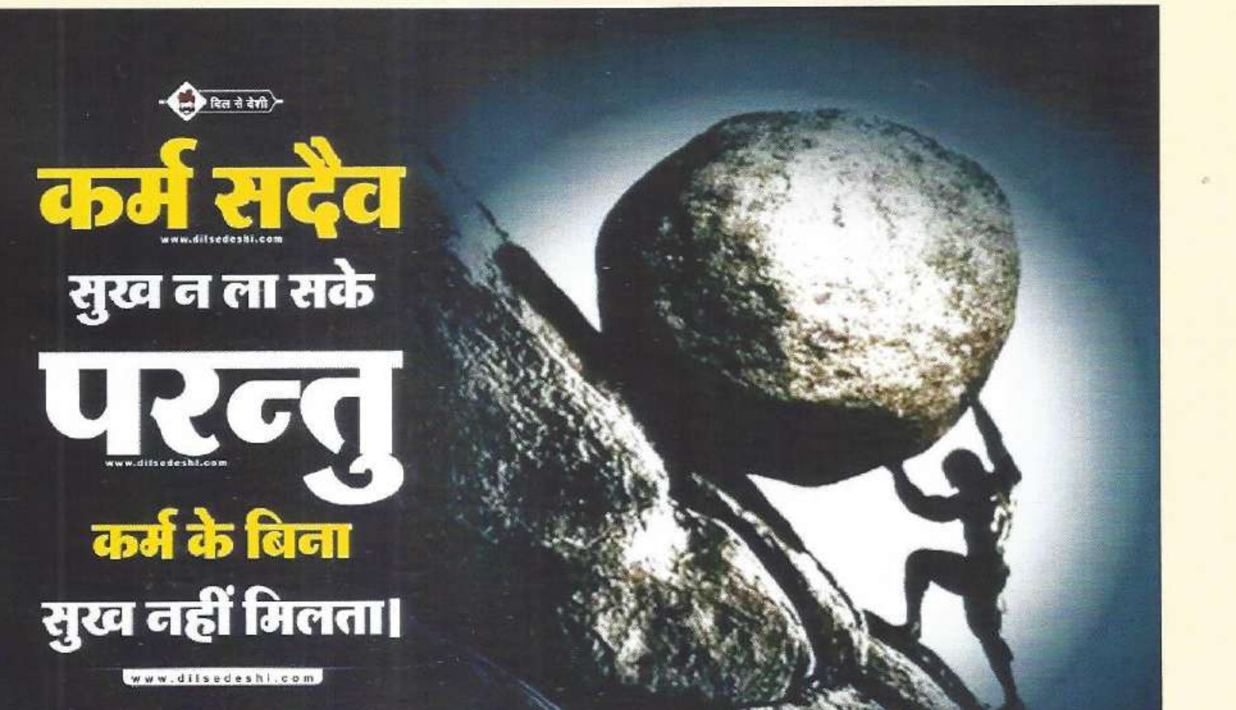

छोटी-छोटी बातें

- हल्के बर्तन गैस पर जल जाते हैं। काफी मलने पर भी लाल धब्बे नहीं छुटते। इन्हें आप रात भर गीली मिट्टी (घर में गमला हो तो उसकी मिट्टी) में दबा दें। सुबह रेती में राख मिलाकर साफ़ करें। चमक उठेंगे।
- बूट पालिश सूखकर टुकड़े-टुकड़े हो गई हो तो उसे घंटे भर के लिए धूप में रखें। थोड़ा तारपीन का तेल (दो बूंदें)डालकर चपटी लकड़ी के टुकड़े से अच्छी तरह चपचपा कर एकसार कर दें।
- कीमती साड़ियाँ लंबे समय तक ज्यों की त्यों रहती हैं। महीने-दो महीने बाद इनकी तह उल्टी लगा कर रखें। मोड़ से नहीं कटेंगी।
- ड्राईक्लीन की हुई आपकी साड़ी पर चिकनाई लग जाए तो टेलकम पाउडर लगाकर धूप में रखें और यदि चाय , कॉफी गिर जाए पेट्रोल में रुई भिगोकर हल्के हाथों से मलें। पेट्रोल न होने पर मिट्टी का तेल प्रयोग करें।
- केले के छिलके सुखाकर रख लें। इन्हें शाम को जलाने से वायुमंडल की दुर्गन्ध दूर होती है।
- कपड़े पर पक्के रंग के धब्बे लग गए हो तो पोटेशियम परमैगनेट को धब्बों पर डाल कर मलें। फिर गर्म पानी में धो डालें। दाग हल्के पड़ जाएंगे।
- सिर की फुंसियों से बचने के लिए तेल में दही व नींबू का रस मिलकर सिर कि मालिश करें , फिर उस पर भाप दें। दो घंटे बाद शैम्पू लगाकर धो लें।
- शहद में नींबू का रस मिश्रित कर लगाने से चेहरे तथा गर्दन की झुर्रियां ठीक हो जाती है।
- बच्चों को जब केला खाने को दे तो उसमें चीरा देकर या मसल कर थोड़ी सी पिसी हुई बड़ी इलायची मिला दें। इससे बच्चे के लिए केला गरिष्ठ नहीं रहेगा।
- केक बनाते समय सांचे में शक्कर पाउडर छिडकने से केक सांचे में नहीं चिपकता है।
- गर्म पानी में लहसुन को **2** मिनट डुबोने से इसे छीलने में परेशानी नहीं होती है।
- फ्रिज में हरी सब्जियां ट्रे में रखने से पूर्व यदि अखबार या स्पंज का टुकड़ा बिछाया जाए तो सब्जियां ज्यादा दिनों तक ताज़ी रहती हैं , क्योंकि अखबार या स्पंज नमी सोख लेता है।
- नींबू निचोड़ने से पहले यदि **15** मिनट गर्म पानी में रख दिया जाए तो रस दोगुना निकलेगा।
- अखरोट की गिरी साबुत निकालनी हो तो अखरोट को रात भर नमक के पानी में भिगोकर रखें और फिर हल्के से खोलें। गिरी निकल जाएगी।
- आलुओं के सख्त होने पर तथा देर से पकने पर यदि आलुओं में साफ़ कीलें चुभो कर उबालें तो आलू जल्दी पक जाते हैं।
- प्याज को फ्रिज में ठंडा करके काटने से आखों में जलन नहीं होती है।
- नींबू और संतरों के छिलकों को धूप में सुखा कर पीस लें। इस चूर्ण से दांत मलें। दांत चमकदार बन जायेंगे।

श्लोक का अर्थ

एक छात्र ने संस्कृत के शिक्षक से पूछा कि
गुरुजी...

एरिक तम नपाम्रधू।
एरिक तम नपाद्यम।।

इस श्लोक का अर्थ क्या होता है..
गुरूजी ने यह श्लोक सभी संस्कृत की पुस्तकों एवं ग्रंथों में खूब ढूंढा
सभी संस्कृत के ज्ञाताओं से भी इस श्लोक का अर्थ पूछा
खूब मेहनत की, रात दिन एक कर दिए
लेकिन कहीं भी इसका अर्थ उन्हें नहीं मिला..!!

लेकिन छात्र उनसे बार बार यही प्रश्न पूछता...
अब तो गुरुजी छात्र को देखकर अपना रास्ता ही बदल देते थे।

आखिर हारकर गुरुजी ने छात्र से पूछा कि बताओ यह श्लोक तुमने कहां पढ़ा..

तब छात्र ने कहा कि उसने यह श्लोक प्रिंसिपल के केबिन के बाहर पढ़ा।

गुरुजी उसे तत्काल प्रिंसिपल के कैबिन की ओर ले गए
वहां छात्र ने उन्हें वह श्लोक कांच के गेट पर लिखा हुआ दिखाया....

गुरुजी ने छात्र को चप्पल टूटने तक मारा...

क्योंकि वह कांच की उल्टी साइड से पढ़ रहा था
सीधी साइड पर लिखा था...

धूम्रपान मत करिए।
मद्यपान मत करिए।।

मनजोत कौर
प्रशासनिक अधिकारी, आयकर कार्यालय
जालंधर

प्रेरणात्मक

कोई भी फैसला सोच-समझकर लो

दोस्तो, हम मुसीबतों को देखकर घबरा जाते हैं, डर जाते हैं जिसके कारण हम कुछ ऐसे फैसले ले लेते हैं जो हमें आगे चलकर दुःख देते हैं। इन सब बातों को एक अच्छे तरीके से समझते हैं।

एक बार की बात है। एक मूर्तिकार एक जंगल से गुजर रहा था। रास्ते में उसकी नजर एक बहुत ही सुंदर पत्थर पर पड़ी। वह सोचने लगा-इससे बहुत ही सुंदर मूर्ति बनेगी। वह हथौड़े और छैनी से उस पत्थर पर वार ही करने वाला था कि अचानक पत्थर से आवाज आई-रुको मुझे छोड़ दो। तुम्हें आगे रास्ते में दूसरा पत्थर मिल जाएगा।

मूर्तिकार बहुत ही दयालु था। उसके बिना कोई सवाल किए अपना सामान उठाया और आगे बढ़ गया। वह जंगल में कुछ दूर ही गया था कि उसे एक और पत्थर दिखाई दिया। वह भी काफी विशाल और सुंदर था। मूर्तिकार ने अपने हथौड़े और छैनी से उस पर काम करना शुरू कर दिया। कुछ ही समय बाद उसने उस पत्थर की बहुत ही सुंदर मूर्ति बना दी। मूर्ति बनाने के बाद वह जंगल पार कर के एक गाँव में पहुँच गया।

गांव वालों ने उससे कहा, "हमारे गांव में एक नया मंदिर बना है, उसके लिए भगवान की एक मूर्ति बना दो। मूर्तिकार ने कहा, "मैंने अभी-अभी जंगल में एक मूर्ति बनाई है। तुम लोग उसे ले आओ।" लोग जंगल में जाकर उस मूर्ति को ले आए और मंदिर में स्थापित कर दिया।

मूर्ति स्थापित करने के बाद लोग बोले, " हमें नारियल फोड़ने के लिए एक पत्थर और चाहिए।" मूर्तिकार बोला, " जंगल में एक पत्थर और है। मैंने उसे ऐसे ही छोड़ दिया था। तुम उसे ले आओ।" कुछ लोग जाकर उस पत्थर को ले आए। वे दोनों पत्थर एक ही समय पर एक ही जगह आ गए लेकिन एक पत्थर की पूजा हो रही थी और दूसरे पत्थर पर नारियल फोड़े जा रहे थे।

एक दिन जिस पत्थर पर नारियल फोड़े जा रहे थे, वह मूर्ति बने पत्थर से बोला, " हम दोनों में क्या फर्क है, जिसके कारण तुम्हारी पूजा होती है और मुझ पर नारियल फोड़े जाते हैं।" मूर्ति बना पत्थर बोला, " फर्क सिर्फ हमारे द्वारा लिए गए फैसलों का है। अगर उस दिन तुमने जंगल में मूर्तिकार का पहला वार सह लिया होता तो आज तुम्हरी भी मेरी तरह पूजा होती।

तात्पर्य यह कि आपके द्वारा आज लिया गया फैसला ही आपके लिए भविष्य में अच्छा और बुरा समय लेकर आता है। इसीलिए मुसीबत आने पर घबराओ नहीं। सोच-समझकर ही फैसला लो क्योंकि वही फैसला आपके आने वाले कल के बारे में बताएगा।

सफलता के लिए जरूरी है मेहनत

बहुत पुरानी बात है। किशनगढ़ राज्य में विक्रमादित्य राजा का राज हुआ करता था। राजा ने एक बार अपने राज्य के लोगों की परीक्षा लेनी चाही। एक दिन उसने सुबह-सुबह जाकर रास्ते में एक बड़ा सा पत्थर रखवा दिया। अब तो सड़क से जो कोई भी निकलता उसे बड़ी परेशानी हो रही थी। लेकिन कोई भी पत्थर हटाने की कोशिश नहीं कर रहा था। राजा यह सब छुपकर देख रहा था। कुछ देर बाद उसके राज्य के मंत्री और अन्य धनी लोग भी वहां आए लेकिन किसी ने भी पत्थर हटाने की कोशिश नहीं की बल्कि सभी राजा को ही गालियां दे रहे थे। रास्ते में इतना बड़ा पत्थर पड़ा है और राजा इसे हटवा क्यों नहीं रहा है? कुछ देर बाद वहां एक गरीब किसान आया, जिसके सिर पर सब्जी का गट्ठर रखा हुआ था। जब वह पत्थर से गुजरा तो उसे वजन की वजह से काफी परेशानी हो रही थी। उसने सिर से गठरी उतारी और पत्थर को पूरी ताकत से हटाने में जुट गया। वह पत्थर बहुत बड़ा था लेकिन किसान ने हार नहीं मानी और कुछ ही देर में रास्ते से पत्थर हटा दिया। जैसे ही वह वहां से चला उसने देखा कि पत्थर वाली जगह पर एक थैला पड़ा था जोकि राजा ने पत्थर के नीचे छुपा दिया था। किसान ने थैला खोला तो देखा कि उसमें सोने के सिक्के थे और एक पत्र था जिसमें लिखा था, "पत्थर हटाने वाले को राजा की ओर से ईनाम।" अब तो किसान खुशी से फूला नहीं समा रहा था। हमें इस कहानी से यह सीख मिलती है कि हमें कभी भी अपनी सोच को नकारात्मक नहीं बनाना चाहिए क्योंकि जो लोग प्रयास करते हैं वे ही अपने जीवन में सफल हो पाते हैं और जो दूसरों के सहारे बैठे रहते हैं वे कभी भी सफल नहीं हो पाते।

हिंदी हमारी पहचान हमारा गर्व।

एकता की जान है,
हिंदी देश की शान है।

ठहराव

एक बार जंगल में से गुजरते हुए गुरु जी ने अपने शिष्य से कहा बेटा प्यास लगी है जाओ पानी लेकर आओ मैं यहीं बैठा आपकी प्रतीक्षा करता हूं। तभी शिष्य अपनी डोल लिए पानी की तलाश में गया। काफी ढूंढने पर उसे एक तालाब नज़र आया। तालाब का पानी बहुत गंदा था ऐसा लगा जैसे थोड़ी देर पहले उसी तालाब से बैल गाड़ियों के बैलों ने पानी पिया हो उसी वजह से पानी में मिट्टी मिल गई व पानी धुंधला नज़र आ रहा था। शिष्य बिना पानी के लौटा। बोला, "गुरु जी तालाब का पानी बहुत धुधंला है इसलिए मैं पानी नहीं लाया"। तभी गुरु जी बोले, "जाओ बेटा पानी वहीं से लेकर आओ"।

वह फिर गया, देखा तालाब का पानी वैसा ही है वह लौट कर गुरु जी से बोला, "गुरु जी पानी तो अभी भी साफ नहीं है।" गुरु जी ने शिष्य को पानी लाने के लिए पांच-छ: बार तालाब पर भेजा जब शिष्य को सातवीं बार तालाब पर भेजा तो शिष्य ने देखा कि पानी शीशे की तरह चमक रहा है, काफी साफ था। उसने डोल भरा व गुरु जी के पास आया और पानी पिलाया। तभी गुरु जी ने शिष्य से कहा, " देखो बेटा हमारे शरीर की आत्मां भी वैसे ही तालाब की तरह साफ सुथरी है परंतु मनुष्य ने बुद्धी का सहारा न लेते हुए अपनी आत्मा को पाँच चोरों के हवाले किया है। शिष्य ने कहा।" गुरु जी कौन से पाँच चोर हैं। गुरु बोले, " काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार ये पाँचो चोरों ने मनुष्य की तालाब रूपी जिंदगी को धुधंला कर दिया है। यदि मनुष्य इसमें ठहराव लाए तो मनुष्य की जिंदगी भी वैसे ही पानी की तरह साफ सुथरी हो जाएगी। जैसे तालाब के पानी में ठहराव से पानी शीशे की तरह चमकने लगा है। बेटा सदा इन पांचो चोरों से बच कर अपनी ज़िन्दगी में ठहराव लाना, तभी मनुष्य की आत्मा को परमात्मा का ज्ञान होगा!

हरतेज कौर
इंसट्रक्टर, भाषा विभाग पंजाब जालंधर.

> हिंदी
> में पत्राचार हो हिंदी में हर व्यवहार हो,
> बोलचाल में हिदी ही
> अभिव्यक्ति का आधार हो

गृहस्थी जीवन में प्रेम प्यार

घर में प्रेम का वातावरण होगा तो गृहस्थी जीवन में भगवान होगा। प्रेम में क्रोध व अहंकार की कोई जगह नहीं है । आजकल सारे रिश्ते नाते सम्बन्ध लेन देन पर ही आधारित हो गए हैं। बिना मतलब के कोई एक-दूसरे से बात भी नहीं करता क्योंकि यह दुनिया सिर्फ और सिर्फ मतलब की है ! परिवार व रिश्ते नाते, सामाजिक सम्बन्ध केवल मतलब के ही हो कर रह गए हैं । बाहर की दुनिया में इन्सान चाहे जितना भी प्रोफैशनल हो जाए, यह बात तो समझ में आती है लेकिन आज के समय में घरों में भी रिश्ते तोल मोल कर बनने लगे हैं। बाप-बेटे, भाई-बहन, पति - पत्नी, सौदे की तरह रिश्ते निभा रहे हैं, बोझ की तरह ढो रहे हैं, जबकि अन्तरात्मा कहती है कि कम से कम घर-परिवार में बाप बेटे में, भाई-बहन में, पति-पत्नी से मिले तो प्रेम और आनन्द मौजूद रहना चाहिए। चलिए देखें ऐसे कैसे होगा। अगर हम सभी इस दुनिया को एक रंगमंच की स्टेज मान कर चलें जिसमें सभी पात्र अपना-अपना पार्ट अदा करें, यह समझ कर कि इसमें से मुझे कुछ नहीं लेना देना, बस मुझे केवल और केवल अपना फर्ज ठीक से निभाना है अगर पार्ट अदा करते-करते हम लोग यह भूल जाएं कि यह सच्चाई है और हम उस पार्ट में ही डूब जाएं तो असलियत मिलने पर दुख महसूस होगा क्योंकि यह जिंदगी भी एक रंगमंच ही है। आप अगर पिता के रोल में हैं तब तो आपकी ज़िम्मेदारी ज्यादा है | आप अपने फर्ज बिना मतलब के निभाते हैं अगर आप का परिवार रिर्टन में कुछ नहीं होता तब भी उस मालिक का शुक्रिया अदा करना चाहिए क्योंकि यह दुनिया गन्दगी से भरी हुई है । विषय-विकारों से भरी पड़ी है। इन्सान का काम केवल इस गन्दगी में रहते हुए उस मालिक से जुड़ना है और उसी का सहारा लेकर आगे बढ़ना है। जैसे कमल का फूल कीचड़ में ही उगता है परन्तु वह कीचड़ से अपने को दूर रखता है। ऐसी ही मिसाल पूरी प्रकृति में इन्सान के उदाहरण के लिए रखी गई है। पेड़ पौधों को देखिए वह अपने ऊपर धूप लेते हैं और अपने नीचे बैठने वालों को छांव देते हैं ।

इसी सन्दर्भ में हनुमान जी के सुन्दर कांड के व्यक्तित्व से हम सब सीख ले सकते हैं। हनुमान जी विभीषण के सामने खड़े थे। परिचय हो रहा था, हनुमान जी अपने मन में विचार कर रहे थे कि सामने वाला व्यक्ति कोई साधु आचरण का है। फिर उनके मन में आया कि "साधु ते होई न कारज हानी।" यानि साधु से काम करने में कोई हानि नहीं होती बल्कि लाभ ही होता है। साधुता एक महक है, एक शैली है। जब घर परिवार के सदस्य एक-दूसरे के प्रति साधु भाव रखेंगे तो आपस में मिलने पर वैसा ही होगा, जैसा हनुमान जी और विभीषण के बीच में हुआ था। हनुमान जी ने श्रीराम की सम्पूर्ण कथा कह कर अपना नाम विभीषण को बताया । सुनते ही दोनों के शरीर पुलकित हो गए और श्री राम का स्मरण कर दोनों के मन प्रेम व आनन्द से भर गए। गृहस्थी जीवन में भी प्रभु की उपस्थिति का अहसास होना चाहिए। गृहस्थी के जीवन में यदि प्रेम, प्यार होगा तो भगवान का आर्शीवाद भी साथ देगा व आनन्द का वातावरण भी उतना ही सहज होगा। आजकल घर में लोग बोझ इसलिए महसूस करते हैं कि सब कुछ है परन्तु ऊपर वाले को शुक्र करने के लिए समय नहीं है जो पास है उसका हम शुक्राना नहीं करते, जो नहीं है उसके लिए दिन रात तड़प रहे हैं तो घर में शान्ति कहां से आएगी। सुन्दर जीवन जीने हेतु हर वक्त मौत का डर व परमात्मा का सिमरण करते रहना चाहिए अगर परमात्मा का सिमरण चलता रहेगा तो मौत का डर एक दिन खत्म हो जाएगा।

लाल सिंह मट्टू
हैड मास्टर, सरकारी हाई स्कूल जंडवाला, अबोहर, पंजाब

प्यार की राह पर

जीते मैं जहर खा लूँगी या फिर किसी नदी में डूब कर मर जाऊँगी, मगर तेरे बग़ैर किसी और से शादी नहीं करूँगी। जीते बापू ने मेरी शादी कहीं और तय कर दी है, अगले रविवार ही वे लोग सगाई की रस्म करने आ रहे हैं। मीतो, तू फिक्र न कर मैं कल ही तेरे पिता जी से बात करूँगा। मीतो, मैंने तुझे जब पहली बार अपने दोस्त की शादी में देखा था, तभी से तुझसे मोहब्बत कर बैठा था, और तेरा चाय में नमक मिलाकर देना और मेरा सारी चाय पी जाना याद है तुझे, एक छोटी सी मुलाकात प्यार में बदल गई।

पर जीत अब मुहब्बत के किस्से याद करने का समय नहीं, तू जल्दी ही मेरे बापू से अपनी शादी की बात कर वरना...... मीतो, हम दोनों की जाति अलग-अलग ज़रूर है लेकिन हमारा प्यार इन सब जाति, धर्म से ऊपर हमारा प्यार सच्चा है ये तेरा और मेरा भगवान जानता है। मुझे पूरा विश्वास है तू एक दिन सोलह शृंगार कर मेरे घर जरूर आयेगी।

पिता जी प्रणाम! मैं आपसे मिलने आया हूँ। हाँ हाँ बैठ जीते, कैसा है तू, बहुत दिनों बाद आया। तू तो कभी आता ही नहीं। कभी-कभी आ जाया करो, और हाँ तुझे अब बहुत सारे काम करने हैं, हमने मीतो की शादी पक्की कर दी है। बस इसी रविवार को लड़के वाले दिल्ली से आ रहे हैं।

पर पिता जी इतनी भी क्या जल्दी है ? जीत बोला।

बेटा अभी अपनी ही बिरादरी में लड़का मिल रहा है, अच्छा कमाता है, मीतों वहाँ बहुत खुश रहेगी। बस अब तू जाकर उसे समझा कल से ही रो रही है। कुछ खा भी नहीं रही, शादी को मना कर रही है।

पर पिता जी अभी ......

बेटा ज़माना ! बहुत खराब है। अब तो रिश्ता अपने आप मिल रहा है फिर इस उमर में हम कहाँ रिश्ता ढूढने जायेंगे। बस हमारी भी एक ही तमन्ना है कि मीतो की शादी किसी अच्छी जगह हो जाए तो सारा भार उतर जाए।

पिता जी मैं चाहता था कि मीतो की शादी बीच में टोकते हुए हाँ-हाँ इसी महीने ही कर देंगे। बहुत इन्तज़ाम करने हैं, देख तू अभी से सारा काम संभाल ले। तुझे ही सब देखना है।

जीता स्तब्ध था और कुछ नहीं बोल सका वह अपनी आँखों से आँसू पोंछता हुआ वापिस हो गया।

मीत, मैं हार गया, तेरे पिता के सामने मेरी जुबान हिल भी नहीं सकी। मैं उन्हें धोखा नहीं दे सकता उनके अरमानों का गला नहीं घोंट सकता। तू अपने माता-पिता की बात मान लें और जैसा वह कहते हैं वैसे ही कर।

पर जीत हमारे प्यार का क्या होगा ? जो हमने जीने मरने की कसमें एक साथ खायी थी उनका।

मीत मैं मज़बूर हूँ मैं उनके अरमानों पर पानी नहीं फेर सकता। वह यह दुख: कभी भी बर्दाश्त नहीं कर पायेंगे कि तू अपनी मर्जी से शादी करे।

रविवार को मीत की सगाई की रसम भी हो गयी। पर जीता नहीं आया।

और एक दिन मीत अपनी शादी का कार्ड लेकर जीत के घर पर जाती है ?

जीते, ले ये मेरी शादी का कार्ड। तू तो इतनी कस्में खाता था, अब तुझे क्या हुआ।

मीत, तू अब फिर ये बातें मत शुरू कर। तेरे माता-पिता जो कहते हैं वह कर। मैं कल ही तेरे घर आऊँगा और सारे इन्तजाम सँभाल लूँगा।

शादी की सारी तैयारियाँ जीते ने की। शादी का जोड़ा, जयमाला, पायल आदि सभी समान वह लेकर आया। उसने सभी तैयारियाँ की और धीरे-धीरे शादी का दिन भी आ गया। सारा घर रोशनी से सजा हुआ था। सभी रिश्तेदार आ चुके थे और सभी अपनी-अपनी तैयारियों में व्यस्त थे। मीत को सुबह से ही इसकी सहेलियाँ तैयार कर रही थी पर वह मन ही मन खुश नहीं थी। इधर जीता भी सब कुछ कर रहा था पर अन्दर ही अन्दर रो रहा था।

बारात आने वाली थी, बैन्ड बाजों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। बारात की आवाज़ सुनते ही सभी बाहर की और चले गये। जीता जयमाला लिये मीतो के कमरे की तरफ बढ़ा तो उसे दुल्हन के रूप में देखकर स्तब्ध रह गया ओर उसकी ओर देखता ही रहा। मीत, मेरी सारी तमन्नायें पूरी हो गयी। आज मैंने तुझे इस रूप में देख लिया। चलो इस जन्म में न सही हाँ अगले जन्म में तू मेरी ही होगी। देखना यह मेरा वायदा है। यह कहता और रोता हुआ जीत वहाँ से वापिस अपने घर चला गया। डोली चलने तक मीत की आँखे जीत को खोजती रही पर उसे नहीं ढूँढ सकी। मीत रो भी रही थी और हँस भी रही थी। सभी ने नम आँखों से मीत को विदाई दी।

अगले दिन ही दिल्ली से फोन पर सूचना मिली कि मीत की कार का एक्सीडेन्ट हो गया है और उसके पति की दुर्घटना में मृत्यु हो गयी। यह सुनते ही मीत के माता-पिता दिल्ली रवाना होते हैं।

आप इसे हमारे साथ ही भेज दें, अब इसका पति ही नही.....इतना कहते मीत के पिता रो पड़े।

हम इसे बहु बनाकर अपने घर लेकर आये हैं। यह हमारी बहु थी लेकिन अब यह हमारी बेटी है। भगवान की मर्जी के आगे किसी की भी नहीं चली। हम इसके हाथों की मेहन्दी का रंग फीका नहीं पड़ने देंगे। यह लाल जोड़े में आती है और इसे लाल जोड़े में ही विदा करेंगे। आप हम पर विश्वास रखें। मीत के ससुर ने कहा।

इधर जीत भी दिल्ली के लिए रवाना हुआ और उसके घर के पास पहुंचने से पहले उसका आटो एक स्कूटर वाले से टकरा गया।

बाबू जी आपके चोट तो नहीं आयी। जीत बोला ! बेटा, मुझे मेरे घर तक छोड़ दो तो मेहरबानी होगी। तुम बहुत दिल हो नहीं तो कौन पूछता है आजकल।

चलिए मैं आपको घर पर छोड़ देता हूँ। आप स्कूटर पर पीछे बैठ जायें और रास्ता बताते रहें। जीता बोला। बेटा बस यही घर है। आओ अन्दर आ जाओ एक कप चाय हमारे साथ नहीं पियोगे ? क्या नाम है तुम्हारा। जीत है मेरा नाम, मैं पंजाब से आया हूँ।

तब तो ज़रूर अन्दर आओ। अरे बहु, दो कप चाय लाओ।

मीत चाय लेकर अन्दर आती है और जीत को देखती है तो उसकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं पिता जी यह देखकर हतप्रभ रह जाते हैं और मीत से पूछते हैं कि तुम इसे जानती हो। मीत चुप रहती है। पिता जी अपनी कहानी सुनाते हैं तो सभी हँसते हैं। जीत भी कहता है कि मैं भी आपके ही घर आया था पर यह नहीं पता था कि इस तरह आपसे मुलाकात होगी।

बेटा, तुमसे इतनी छोटी सी मुलाकात में ऐसा लगता है कि मेरा अपना बेटा वापिस आ गया, अगर तुम हाँ करो तो मीत की शादी तुम्हारे साथ कर दें। मैं मीत को विधवा नहीं रखना चाहता। यह हमेशा खुश रहे और भगवान तुम दोनों को सलामत रखें। मीत और जीत की उसी दिन मन्दिर में शादी हो गई।

आज का दिन मीत के जीवन का स्वर्णिम दिन है उसने जो सपने सजाये थे वे साकार हुए, पर उसको इसकी कीमत चुकानी पड़ी। आज उसका प्रियतम उसके पास है जैसे कि सारा संसार उसकी बाँहों में समा गया।

हो। वह खुश है और जीत की तरफ एक टक निहार रही है।

कमल कुमार भास्कर

जालंधर

अब पछताए होत क्या

इंताने पतीले में पानी डाली और आलू उबलने के लिए गैस पर चढ़ा दिए। गैरा के पास ई- खड़े हम कालेज के ज़माने के अपने तमाम दोस्त यारों को गालियां निकालते रहे। सबकी इसलिए क्योंकि हमें याद नहीं आ रहा था कमबख्त उनमें से कौन था जिसने हमारे जेहन में यह बात पुरोड़ी थी कि शादी तो नौकरीपेशा लड़की से ही करनी चाहिए।

मां बाप ने बीसियों गुणवान लड़कियां हमें दिखाई, परहमारे सिर पर तो नौकरीपेशा लड़की की धुन सवार थी, इसलिए हम "जिन खोजा तिन पाइया " की तरह उन लड़कियाँ में कोई न कोई अवगुण खोज़ ही निकालते थे और उन गुणी लड़कियों पर अस्वीकार की मोहर लगाकर विना उनकी मनः स्थिति पर विचार किए हम विजयपताका फहराते हुए घर लौट आते।

"आवश्यकता अविष्कार की जननी है" आख़िर हमारी खोज सार्थक सावित हुई। हमारे किसी दूर के रिश्तेदार ने वताया कि एक लड़की है तो सही उनकी नज़र में पर हो सकता है वो हमसे दो-चार साल बड़ी हो। हमने बिना हीलहुज्जत के कहा, भइया, आप जल्दी से बता दो हम उस लड़की की जन्मतिथि अथवा जन्मपत्री संबंधी क दिमाग में कराई स्थान नहीं दे संकुलाते हुए कहा, "हलाले गुला है वो बड़े फर्म के बड़े अधिक की प्राइमेट है। आप तो जानते ही हैं बड़ी यहां तो पार्टियां वगैरा अक्सर ही होती है। उन्होंने हाँ आधारान देते हुए कहा, पर आपको कोई "प्राब्लम नहीं होगी क्योंकि बद कभी ऐसा होता है साहब की गाड़ी उन्हें घर तक छोड़ जाती है। उन्होंने अपना मुंह हमारे कान के नजदीक लाते हुए भेद आब्दी में बताया कि जब कभी "म" को या सेव के परिवार के किसी व्यक्ति को कोई विशीष ओके के लिए आवश्यकता हो साहार समेत गाड़ी भेज देते हैं।

हमने सोचा यदि, यहाँ बात बन जाए की अपने तो पौ-बारहां। एक तो चुपड़ी ऊमर से दो-दो | हमने अगले ही दिन अपनी स बढ़िया "ड्रेस" निकाली। लड़की पसन्द करने तो क्या जाना था हमें तोडर था कहीं '' हमें ही "रिजेक्ट" न करदें। और हम जैसे अपने मन पर काबू पा उनके यहां पहुंचे। औपचारिक वार्तालाप के बाद मैडन ने अपनी कुछ शर्ते हमारे सामने रखी।

पहली यह कि उन्हें प्रायः पार्टियों पर जाना पड़ेगा, जिस पर हम कोई एतराज़ नहीं करेंगे और यह भी कि देर सवेर संबंधी कोई भी प्रश्न पूछने का हक हमें नहीं होगा। हमने तपाक से स्वीकृति देते हुए कहा, "भला हम ऐसा क्यों करने लगे। साहब की गाड़ी तो आपको घर छोड़ जाएगी ही"। उन्होंने स्वीकृति में गर्दन हिलाई।

मैडम पुनः बोली, "छुट्टी के दिन हम "कम्पलीट रैस्ट" करेंगें जिस दौरान हम अपनी मित्र मण्डली के साथ " शापिंग" करने या फिर उनके साथ मनोरंजन हेतु उनके घर या किसी रेस्तरां वगैरा जाया करेंगे, आपको इस पर कोई आपत्ति नहीं होगी।"

हमने मुस्कुराने के अन्दाज़ में अपने होंठ फैलाते हुए कहा, "अजी आप जानिए और आपकी मित्र मण्डली, हमें भला आपत्ति क्यों होने लगी | मनोरंजन अथवा आरामके नाम पर हमें तो वैसे भी चारपाई तोड़ते हुए टी.वी. देखना ज़्यादा अच्छा लगता है, इसलिए आप आराम से छुट्टी के दिन घूम-फिर सकती हैं।"

मैडम ने ऐसी ही कुछेक शर्ते और हमारे सामने रखीं पर हमने उनकी हर बात बड़े ही सहज ढंग से मानली। दरअसल, हमारा ध्यांन उनकी बातों की तरफ कम ही था। हम तो कल्पनालोक में घूमते हुए देख रहे थे हम स्कूटर चला रहे हैं, मैडम सजी-सँवेरी हमारी कमर के गिर्द अपनी बांह लपेटे हमारे पीछे स्कूटर पर बैठी हैं, हम उन्हें उनके आफिस ड्राप" कर रहे हैं। शाम को हम दोनों थके- मांदे घर लौटे, मैडम जल्दी से किचन में घुस गई, पुनः दो कप चाय के हाथ में पकड़े मुस्कुराते हुए हमारे सामने खड़ी हो गई हैं। हमने कप पकड़ने के लिए ज्यों ही हाथ

आगे बढ़ाया कि मैडम के शब्द कानों में पड़े, क्षमा कीजिए, मैं किसी भी अन्जान व्यक्ति से हाथ नहीं मिलाती और उन्होंने दोनों हाथ जोड़ हमें नमस्ते की। हम कल्पनानगरी से बाहर निकले और मुस्कुराते हुए उनसे विदा ली। चूंकि हमने मैडम की सारी शर्तें मान ली थी इसलिए आनन-फानन उसी महीने हमारी शादी हो गई। लगभग एक महीना मैडम छुट्टी पर रहीं। उस दौरान हम उन तमाम लोगों को कोसतेरहे जो यह कहते हैं कि औरत तो घर की चारदीवारी में ही अच्छी लगती है, औरत के नौकरी करने से घर अव्यवस्थित हो जाता है, मर्द का चैन छिन जाता है, बेआरामी हो जाती है वगैरा वगैरा।

छुट्टी ख़तम हुई। मैडम ने ऑफिस जाना शुरु किया। शादी का खुमार धीरे-धीरे उतरने लगा। सुबह दोनों को जल्दी होती ऑफिस जाने की। आलसी तबियत के कारण हम जरा देर से बिस्तर छोड़ने के आदी थे। शादी से पहले तो ऐसा था कि हम आराम से चादर ताने खरटि भरते रहते। महरी आती, सफाई- कपड़ों का काम निपटा जब चली जाती, तब हम आराम से उठते और आधे घण्टे में तैयार हो ऑफिस के पास वाले ढाबे पर पहुंच जाते थे। गरमागरम परांठा व दही, वाह। आज भी याद कर मुंह में पानी भर आया। ऐन दस बजते बजते हम "पंक्चुअएलटी" का ढिंढोरा पीटते हुए ऑफिस पहुंच जाते। नकोई चिक चिक न कोई पिक-पिक। शाही ठाठ थे अपने।

अब तो बस ज़रा सी देर हुई नहींकि " किचन" से बर्तनों के पटकने की आवाज़ शुरु हो जाती है और हम संकुचाते घबराते बिस्तर से उछल पड़ते यह सोचकर कि यदि अभी भी हमने बिस्तर से अपना पल्लू न छुड़ाया तो देवी जी कहीं चण्डीरुप न धारण करलें। भइया, क्या बताएं, अपनी तो गृहस्थी की ट्रेन अब "एक्सप्रेस" से "लोकल" हो गई है। कब चल पड़े कब रुक जाए, कब गति पकड़ ले, कुछ कहा नहीं जा सकता। आज छुट्टी है, सोचा था पिछली पूरी कसर निकालेंगे, देर तक सोएंगे। पर सुबह की उजली किरणों के फूटते ही श्रीमती जी के गाने के बोल सुनाई दिए :-

"रात गवाई सोई के दिवस गवाया खाए रहिमन हीरा जन्म था कोड़ी बदले जाए।"

मन मारकर यह सोचते हुए उठ पड़े हो न हो यह दोहा तो खास तौर पर हमारे लिए ही गाया जा रहा है। श्रीमती जी तौयार हो रही पूछ है। शर्तें में बंधा होने के कारण यह तो ही नहीं सकते कि सुबह ही सुबह सरकार की सवारी किस तरफ से निकलेगी। अलबत्ता वे खुद ही बोलीं, मीना के यहां जा रही हूं, "शापिंग" का "प्रोग्राम" है। आप ऐसा कीजिएगा, महरी आए तो सब बर्तन खाली कर देना और हां आलू उबाल देना। मुझे शायद देर हो जाए आलू उबले होंगे तो जल्दी से तड़क लूंगी। इतना कह वे बिना हमारी और कृपादृष्टि किए हाथ में पर्स हिलाती चली गई। हम खिसियानी बिल्ली की तरह खम्बा नोचे हुए बस सोचते ही रह गए।

"अब पछताए होत क्या.............

सुषमा गुप्ता
दूरदर्शन केन्द्र
जलंधर

राजभाषा हिन्दी

भारत का संविधान यूँ ही नहीं दुनिया का सबसे बेहतरीन संविधान कहा जाता है, संविधान निर्माण के दौरान संविधान सभा में कभी तीखी बहसें हुई, कभी शानदार वक्तव्यों ने अन्य सदस्यों को मेजें थपथपाने पर मजबूर कर दिया। उल्लेखनीय है कि संविधान सभा की सबसे तीखी बहस हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा बनाने को लेकर हुई थी, बस इतनी तीखी थी कि भारतीय संविधान के शिल्पकार डॉ. भीमराव अम्बेडकर को यह कहना पड़ा कि यह संविधान सभा में जितनी गहमागहमी हिंदी को अधिकारिक भाषा बनाने को लेकर देखने को मिली, वह अभूतपूर्व था।

पुष्ठभूमि

* विदित हो कि 26 जनवरी, 1950 को जब हमारा संविधान लागू हुआ तो इसमें देवनागरी में लिखी जाने वाली हिंदी सहित 14 भाषाओं को आठवीं सूची में आधिकारिक भाषाओं के रूप में रखा गया था। संविधान के मुताबिक 26 जनवरी, 1965 में हिंदी को अंग्रेजी के स्थान पर देश की आधिकारिक भाषा बनना था और उसके बाद हिंदी में ही विभिन्न राज्यों को आपस में और केंद्र के साथ संवाद करना था। ऐसा आसानी से हो सके इसके लिये संविधान में 1955 और 1960 में राजभाषा आयोगों को बनाने की भी बात कही गई थी। इन आयोगों को हिंदी के विकास के सन्दर्भ में रिपोर्ट देनी थी और इन रिपोर्टों के आधार पर संसद की संयुक्त समिति के द्वारा राष्ट्रपति को इस संबंध में कुछ सिफारिशें करनी थीं।

* गौरतलब है कि देश को अज़ादी के बाद 20 सालों में भाषा के मुद्दे ने सर्वाधिक परेशान किया था और एक समय तो स्थिति इतनी गंभीर हो गई थी कि भाषा के विवाद के कारण देश का विखंडन अवश्यंभावी दिखने लगा था। दक्षिण भारत के राज्यों में रहने वालों का डर था कि हिंदी के लागू हो जाने से वे उत्तर भारतियों के मुकाबले विभिन्न क्षेत्रों में कमज़ोर स्थिति में हो जाएंगे। हिंदी को लागू करने और न करने के आंदोलनों के बीच वर्ष 1963 में 'राजभाषा कानून' पारित किया गया जिसने 1965 के बाद अंग्रेजी को राजभाषा के तौर पर इस्तेमाल न करने की पाबंदी को खत्म कर दिया। हालांकि, हिंदी का बिरोध करने वाले इससे पूरी तरह संतुष्ट नहीं थे उन्हें लगता था कि पंडित नेहरू के बाद इस कानून में मौजूद कुछ अस्पष्ठता फिर से उनके विरुद्ध जा सकती है।

* 26 जनवरी, 1965 को हिंदी देश की राजभाषा बन गई और इसके साथ ही दक्षिण भारत के राज्यों- खास तौ पर तमिलनाडु (तब का मद्रास) में, आंदोलन और हिंसा का एक जबर्दस्त दौर चला औ इसमें कई छात्रों ने आत्मदाह तक कर लिया इसके बाद लाल बहादुर शास्त्री के मंत्रिमंड में सूचना और प्रसारण मंत्री रही इंदिरा गांधी के प्रयासों से इस समस्या का समाधान दूंढा गया जिसकी परिणति 1967 में राजभाषा कार में संशोधन के रूप में हुई। इस संशोधन जरिये अंग्रेजो को देश की राजभाषा के रूप में तब तक मान लिया गया जब कि गैर-राज्य ऐसा चाहते हों, अ तक यही चली आ रही है।

भाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधान

* भारतीय संविधान का अनुच्छेद 29 अल्पसंख्क के हितों की रक्षा करता है। अनुच्छेद में गया है कि नागरिकों के किसी वर्ग "जिसकी स्वयं की विशिष्ट भाषा, लिपि या संस्कृति है" को उसका संरक्षण करने का अधिकार होगा।

* अनुच्छेद 343 भारत संघ की आधिकारिक भाषा से संबंधित है। इस अनुच्छेद के अनुसार, हिंदी देवनागरी लिपि में होनी चाहिये और अंकों के संदर्भ में भारतीय अंकों के अंतराष्ट्रीय रूप का अनुसरण किया जाना चाहिये। इस अनुच्छेद में यह भी कहा गया है कि संविधान को अपनाए जाने के शुरुआती 15 वर्षों तक अंग्रेजी का आधिकारिक भाषा के रूप में उपयोग जारी रहेगा।

* अनुच्छेद 346 राज्यों और संघ एवं राज्य के बीच संचार हेतु आधिकारिक भाषा के विषय में प्रबंध करता है। अनुच्छेद के अनुसार, उक्त कार्य के लिये "अधिकृत" भाषा का उपयोग किया जाएगा। हालाँकि यदि दो या दो से अधिक राज्य सहमत

हैं कि उनके मध्य संचार की भाषा हिंदी होगी, तो आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी का उपयोग किया जा सकता है।

* अनुच्छेद 347 किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध। यह अनुच्छेद राष्ट्रपति को किसी राज्य की आधिकारिक भाषा के रूप में एक भाषा को चुनने की शक्ति प्रदान करता है, यदि किसी राज्य की जनसंख्या का पर्याप्त भाग यह चाहता है कि उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राज्य द्वारा मान्यता दी जाए तो वह निदेश दे सकता है कि ऐसी भाषा को भी उस राज्य में सर्वत्र या उसके किसी भाग में ऐसे प्रयोजन के लिये, जो वह विनिर्दिष्ट करे, शासकीय मान्यता दी जाए।

* अनुच्छेद 350Q प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएँ प्रदान करता है।

* अनुच्छेद 350 क्रभाषाई अल्पसंख्यकों के लिये एक विशेष अधिकारी की नियुक्ति का प्रावधान करता है। विशेष अधिकारी को राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किया जाएगी, यह भाषाई अल्पसंख्यकों के सुरक्षा उपायों से संबंधित सभी मामलों की जाँच करेगा तथा सीधे राष्ट्रपति को रिपोर्ट सौंपेगा। तत्पश्चात् राष्ट्रपति उस रिपोर्ट को संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है या उसे संबंधित राज्य / राज्यों की सरकारों को भेज सकता है।

भारत की राष्ट्र भाषा क्या है

भारत में अधिकतर लोग हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में ही जानते हैं, भारत में सबसे अधिक हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाता है, परन्तु यह एक सत्य है, कि हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है। भारत के संविधान में अनुच्छेद 343 के अंतर्गत हिंदी भाषा को भारत की 'राजभाषा' के रूप में मान्यता दी गयी है। इसका अर्थ है कि हिंदी का प्रयोग केवल राजकीय कार्य में किया जा सकता है। भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा का कोई उल्लेख नहीं किया गया है।

जब भारतीय संविधान का निर्माण हो रहा था तब उस समय राष्ट्रभाषा का प्रश्न उठा था। तब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने संस्कृत को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता देने का सुझाव दिया गया था, परन्तु इसका विरोध होने लगा, जिस कारण संस्कृत को राष्ट्रभाषा नहीं माना गया। संविधान सभा में कई लोग हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में चाहते थे, परन्तु गैर हिंदी क्षेत्र के लोगों द्वारा इसका विरोध किया गया। इसलिए संविधान सभा ने किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता नहीं दी।

वर्तमान में भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सभी भाषाओं के विषय में जानकारी दी गयी है। इस समय आठवीं अनुसूची में 22 भारतीय भाषाओं का शामिल किया गया है। संविधान निर्माण के समय 14 भारतीय भाषाओं को संविधान में सम्मिलित किया गया था। वर्ष 1967 में सिन्धी भाषा को अनुसूची में शामिल किया गया। वर्ष 1992 में कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली भाषा को शामिल किया गया। वर्ष 2004 में बोड़ो, डोगरी, मैथिली और संथाली भाषा को शामिल किया गया।

भारत में हिंदी राष्ट्रभाषा क्यों नहीं

आज़ादी के बाद हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के समर्थक महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू भी थे। इन्होंने एक या दो भाषाओं को पूरे देश की भाषा बनाने की मुहिम चला रही थी जबकि हिंदी विरोधी गुट इसका विरोध कर रहा था और अंग्रेजी को ही राज्य की भाषा बनाए रखने के पक्ष में था। गौरतलब है कि 1949 में भारत की संवैधानिक समिति एक समझौते पर पहुंची, इसे मुंशी-आयंगर समझौता कहा जाता है। इसके बाद जिस भाषा को राजभाषा के तौर पर स्वीकृति मिली वह हिंदी (देवनागरी लिपि में) थी।

संविधान में भारत की केवल दो ऑफिशियल भाषाओं का जिक्र था। इसमें किसी राष्ट्रीय भाषा% का जिक्र भी नहीं था। इनमें से ऑफिशियल भाषा के तौर पर अंग्रेजी का प्रयोग अगले पंद्रह सालों तक उपयोग करने का लक्ष्य था। ये पंद्रह साल संविधान लागू होने ञ्च की तारीख (26 जनवरी, 1950) से अगले 15 साल यानी 26 जनवरी, 1965 को खत्म होने वाले थे।

संविधान लागू होने ज्ञ की तारीख (26 जनवरी, 1950) से अगले 15 साल यानी 26 जनवरी, 1965 को खत्म होने वाले थे।

हिंदी समर्थक राजनेता जिसमें बालकृष्ण शर्मा और पुरुषोत्तम दास टंडन शामिल थे। उन्होंने अंग्रेजी को अपनाए जाने का विरोध किया। इस कदम को साम्राज्यवाद का अवशेष बताया और साथ ही केवल हिंदी को भारत की राष्ट्रीय भाषा बनाए जाने के लिए विरोध प्रदर्शन किए। उन्होंने इसके लिए कई प्रस्ताव रखे लेकिन कोई भी प्रयास सफल नहीं हो सका क्योंकि हिंदी अभी भी दक्षिण और पूर्वी भारत के राज्यों के लिए अनजान भाषा ही थी। 1965 में जब हिंदी को सभी जगहों पर आवश्यक बना दिया गया तो तमिलनाडु में हिंसक आंदोलन हुए, जिसके बाद कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने तय किया कि संविधान के लागू हो जाने के 15 साल बाद भी हिंदी को हर जगह लागू किए जाने पर अगर भारत के सारे राज्य राजी नहीं हैं तो हिंदी को भारत की एकमात्र ऑफिशियल भाषा नहीं बनाया जा सकता है। इसके बाद सरकार ने राजभाषा अधिनियम, 1963 लागू किया। इसे 1967 में संशोधित किया अपना लिया। ये दोनों भाषाएं अंग्रेजी और हिंदी थीं।

1971 के बाद, भारत की भाषाई पॉलिसी का सारा ध्यान क्षेत्रीय भाषाओं को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में जोड़ने पर रहा जिसका मतलब था कि ये भाषाएं भी ऑफिशियल लैंग्वेज कमीशन में जगह पाएंगी और उस राज्य की भाषा के तौर पर इस्तेमाल की जाएंगी। यह कदम बहुभाषाई जनता का भाषा को लेकर गुस्सा कम करने के लिए उठाया गया था।

25 जनवरी, 2010 को दिए एक फैसले में गुजरात उच्च न्यायालय ने अपने एक फैसले में कहा था कि भारत की बड़ी जनसंख्या हिंदी को राष्ट्रीय भाषा मानती है। ऐसा कोई भी नियम रिकॉर्ड में नहीं है न ही कोई ऐसा आदेश पारित किया गया है जो हिंदी को देश की राष्ट्रीय भाषा होने की घोषणा करता हो।

गैर हिंदी भाषी जनसंख्या में भी करीब 20 फीसदी लोग हिंदी समझते हैं। इसलिए हिंदी भारत की आम भाषा है। लेकिन कई भाषाविदों का कहना है कि हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ के लोगों को हिंदी भाषियों में गिन लिया जाता है, जबकि वे लोग हिंदी भाषी नहीं हैं और उनमें से बहुत से लोगों की भाषा जनजातीय या क्षेत्रीय है। ऐसे में इन्हें हिंदी भाषी के तौर पर गिन लेना सही नहीं है।

इसके अलावा भारत के दक्षिण में केरल, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक, पश्चिम में गोवा, महाराष्ट्र और गुजरात, भारत के उत्तर - पश्चिम में पंजाब और जम्मू-कश्मीर, पूर्व में ओडिशा और पश्चिम बंगाल उत्तर-पूर्व में सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, त्रिपुरा, नगालैंड, मणिपुर, मेघालय और असम, ये इस देश के 29 में से 20 राज्य हैं जिनमें हिंदीभाषी बहुत कम हैं। यही कारण है कि हिंदी को अभी तक राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं मिल पाया है।

हिंदी भाषा की वर्तमान दशा

राष्ट्रभाषा का शाब्दिक अर्थ है राष्ट्र की भाषा, जो भाषा देश के बहुसंख्यक लोगों द्वारा व्यवहार में लायी जाती है। भारत की मुख्य विशेषता यह है कि यहाँ विभिन्नता में एकता है। भारत में विभिन्नता का स्वरूप न केवल भौगोलिक है, बल्कि भाषायी तथा सांस्कृतिक भी है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में 1652 मातृभाषायें प्रचलन में हैं, जबकि संविधान द्वारा 22 भाषाओं को राजभाषा की मान्यता प्रदान की गयी है। किंतु सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी ही अघोषित रूप से भारत की राष्ट्रभाषा है और यह कई अन्य क्षेत्रीय भाषाओं व बोलियों की जननी है।

भारत की राजभाषा के रूप में हिंदी

हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में 14 सितम्बर सन् 1949 को स्वीकार किया गया। इसके बाद संविधान में राजभाषा के सम्बन्ध में धारा 343 से 352 तक की व्यवस्था की गयी। इसकी स्मृति को ताजा रखने के लिये 14 सितम्बर का दिन प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

धारा 343 (1) के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिंदी एवं लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिये

प्रयुक्त अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप (अर्थात 1, 2, 3 आदि) होगा।

संसद का कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जा सकता है। परन्तु राज्यसभा के सभापति महोदय या लोकसभा के अध्यक्ष महोदय विशेष परिस्थिति में सदन के किसी सदस्य को अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुमति दे सकते हैं। [संविधान का अनुच्छेद 120] किन प्रयोजनों के लिए केवल हिंदी का प्रयोग किया जाना है, किन के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग आवश्यक है और किन कार्यों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाना है, यह राजभाषा अधिनियम 1963 राजभाषा नियम 1976 और उनके अंतर्गत समय समय पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की ओर से जारी किए गए निदेशों द्वारा निर्धारित किया गया है।

हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किये जाने का औचित्य

हिंदी को राजभाषा का सम्मान कृपापूर्वक नहीं दिया गया, बल्कि यह उसका अधिकार है। यहां अधिक विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है, केवल राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा बताये गये निम्नलिखित ज्लक्षणों पर दृष्टि डाल लेना ही पर्याप्त रहेगा, जो उन्होंने एक %राष्ट्रीय भाषा के लिए बताये थे। उन लक्षणों पर हिंदी भाषा बिल्कुल खरी उतरती है।

राजभाषा आयोग

संविधान के अनुच्छेद 344 में राष्ट्रपति को राजभाषा आयोग को गठित करने का अधिकार दिया गया है। राष्ट्रपति अपने इस अधिकार का प्रयोग प्रत्येक दस वर्ष की अवधि के पश्चात् करेंगे। राजभाषा आयोग में उन भाषाओं के प्रतिनिधियों को शामिल किया जाएगा, जो संविधान की आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट हैं। इस प्रकार राजभाषा में 18 सदस्य होते हैं।

राजभाषा हिंदी की विकास-यात्रा

स्वतंत्रता पूर्व

1833-86 : गुजराती के महान कवि श्री नर्मद (1833 - 86) ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का विचार रखा।

1872 : आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी कलकत्ता में केशवचन्द्र सेन से मिले तो उन्होने स्वामी जी को यह सलाह दे डाली कि आप संस्कृत छोड़कर हिंदी बोलना आरम्भ कर दें तो भारत का असीम कल्याण हो। तभी से स्वामी जी के व्याख्यानों की भाषा हिंदी हो गयी और शायद इसी कारण स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश की भाषा भी हिंदी ही रखी।

1893 : काशी नागरीप्रचारिणी सभा की स्थापना

1918 : मराठी भाषी लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से घोषित किया कि हिंदी भारत की राजभाषा होगी।

1935 : मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री रूप में सी0 राजगोपालाचारी ने हिंदी शिक्षा को अनिवार्य कर दिया।

स्वतंत्रता के बाद

14-9-949 : संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इस दिन को अब हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

1971 : सरकार के आदेशों और कानूनो के हिंदी अनुवाद हेतु केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो का गठन।

1977 : श्री अटल बिहारी वाजपेयी, तत्कालीन विदेश मंत्री ने पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित किया।

1986 : कोठारी शिक्षा आयोग की रिपोर्ट। 1968 में पहले ही यह सिफारिश की जा चुकी थी कि भारत में शिक्षा का माध्यम

भारतीय भाषाएं होनी चाहिए। उच्च शिक्षा के माध्यम के संबंध में नई शिक्षा नीति (1986) के कार्यान्वयन कार्यक्रम में कहा गया – स्कूल स्तर पर आधुनिक भारतीय भाषाएं पहले ही शिक्षण माध्यम के रूप में प्रयुक्त हो रही हैं। आवश्यकता इस बात की है कि विश्वविद्यालय के स्तर पर भी इन्हें उत्तरोत्तर माध्यम के रूप में अपना लिया जाए।

1986-87 : इंदिरा गांधी राजभाषा

पुरस्कार प्रारम्भ किए गए।

2000 : राजभाषा विभाग का पोर्टल का लोकार्पण किया गया जिसमें विभाग से संबंधित विभिन्न जानकारियां द्विभाषिक रूप में उपलब्ध कराई गई।

2003 : मंत्रिमंडल ने एन.डी.ए. तथा सी.डी. एस. की परीक्षाओं में प्रश्न पत्रों को हिंदी में भी तैयार करने का निर्णय लिया।

2004 : मातृभाषा विकास परिषद् द्वारा दायर एक जनहित याचिका पर उच्चतम न्यायालय ने यह पाया कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के गठन का उद्देश्य हिंदी एवं अन्य आधुनिक भाषाओं के लिए तकनीकी शब्दावली में एकरूपता अपनाया जाना है। यह एकरूपता तकनीकी शब्दावली के प्रयोग के लिए आवश्यक है। उच्चतम न्यायालय ने निदेश दिया कि आयोग द्वारा बनाई गई तकनीकी शब्दावली भारत सरकार के अंतर्गत एन.सी.ई.आर.टी तथा इसी प्रकार की अन्य संस्थाओं द्वारा तैयार की जा रही पाठय पुस्तकों में प्रयोग में लाई जाए।

2004-05 कंप्यूटर की सहायता से हिंदी स्वयं सीखने के लिए कंप्यूटर प्रोग्राम तैयार करवा कर उसके निशुल्क प्रयोग के लिए उसे राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया।

2005 : कम्प्यूटर पर हिंदी के सुगम प्रयोग हेतु 525 हिंदी फोंट, फोंट कोड कनवर्टर, अंग्रेजी – हिंदी शब्दकोश, हिंदी स्पेल चेकर को निशुल्क प्रयोग के लिए वेब साइट पर उपलब्ध करा दिया गया।

मंत्र – राजभाषा अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद सॉफ्टवेयर लघु उद्योग एवं कृषि क्षेत्रों के लिए प्रयोग एवं डाउनलोड हेतु राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया।

मार्च 2014 में केंद्रीय गृह मंत्रालय ने एक परिपत्र जारी कर सरकारी विभागों व मंत्रालयों को सोशल मीडिया पर हिंदी को प्रमुखता देने को कहा, जिस पर कई गैर-हिंदी भाषी राज्यों ने विवाद खड़ा कर दिया।

2014 में ही प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र संघ को हिंदी में सम्बोधित किया।

इंटरनेट पर हिंदी के इस्तेमाल को बढावा देने के लिये देवनागरी में भारत डोमेन की शुरुआत की गयी।

शासकीय स्तर पर खासकर तकनीकी, न्यायालयीन, कर राजस्व आदि क्षेत्रों में मान्य मानक शब्दावली की हिंदी में अनुपलब्धता ने राजभाषा के प्रयोग में बड़ी बाधा खड़ी की हुई है। संवैधनिक सिथति के अनुसार विभिन्न मंत्रालयों द्वारा राजभाषा हिंदी को विभिन्न क्षेत्रों जैसे- चिकित्सा, मानविकी, रेल, सूचना व प्रसारण-विज्ञान, गणित, डाक व तार आदि की तकनीकी पारिभाषिक शब्दावली की दृष्टि से विकसित किया जा रहा है। हिंदी टाइपराइटर, टेलीप्रिंटर, कम्प्यूटर आदि की सहायता से भी कार्यालयी स्तर पर राजभाषा हिंदी को बढ़ावा दिया जा रहा है। परंतु वर्तमान स्थिति को पूरी तरह संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। हिंदी दिवस मना लेना ही पर्याप्त नहीं है। इसका व्यापक प्रचार व अनुप्रयोग आवश्यक है।

-नवीव मेहरा

सहायक अनुभाग अधिकारी,

एकीकृत वित्त विभाग

चुटकुले

महिला (दूकानदार से): भैया ठीक रेट लगा लो हमेशा आपकी दुकान से ही तो समान खरीदते हैं।
दूकानदार : मैडम भगवान से तो डरो। मैंने आज ही तो दुकान खोली है। आज पहला ही दिन है।

एक आदमी घर पर बैठा टीवी देख रहा था, तभी वो जोर जोर से चीखने लगा......
नहीं..नहीं..घोड़े से मत उतर ......पागल मत उतर
ये एक चाल है। यहां जाल बिछा है
कुत्ते की मौत मरेगा बेवकूफ ..।
पत्नी (किचन से) : कौन सी फिल्म देख रहे हो ?
आदमी : हमारी शादी की

प्रतियोगिता में शर्त लगी थी कि ..
खुशी को 3 शब्दों में लिखो !
सब पन्ने पटलते रहे और मैंने लिखा "पत्नी मायके गई"।
कसम से आयोजक कंधे पर उठाकर स्टेज तक ले गए।
मगर अब 3 घंटे से घर के बाहर बैठा हूँ, पत्नी दरवाजा नहीं खोल रही।

पति और पत्नी एक पार्क में हाथ में हाथ डाले घूम रहे थे ..
तभी एक शरारती बच्चा वहां से गुजरा और बोला
'अंकल ! कल वाली ज्यादा सुंदर थी'।
अब पति 3 दिन से खाली पेट ही, पार्क में उस बच्चे को ढूंढ रहा है।

पंकज सैनी
कर सहायक
केंद्रीय मंडल-,जालंधर

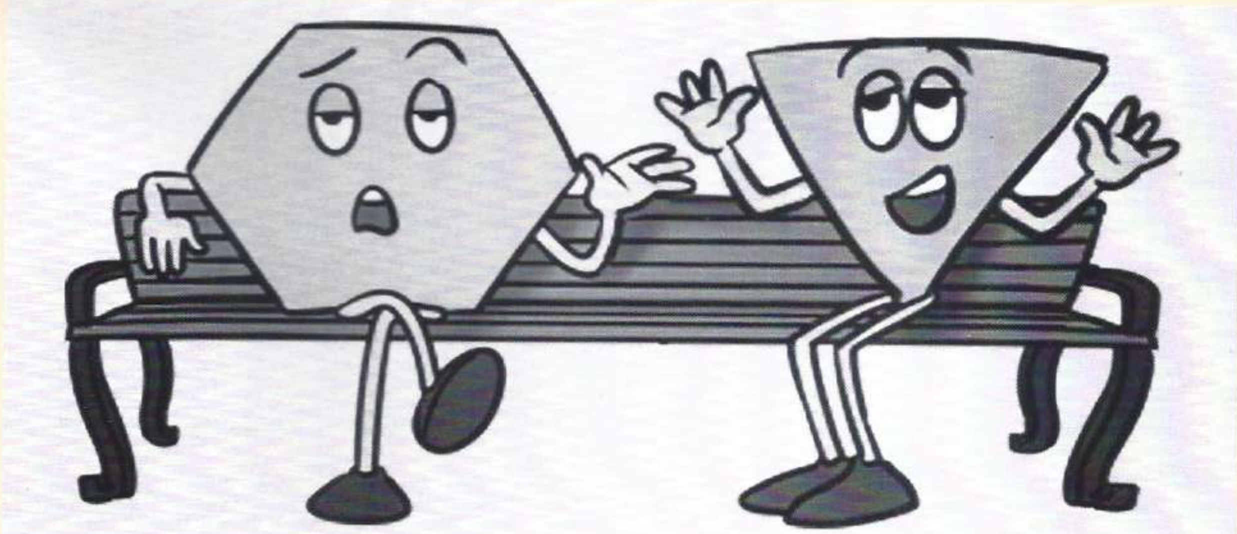

शब्दों के बदलते रूप

भाषा विज्ञान है या कला इस पर विद्वानों ने अपने अपने मत दिये हैं और अंत में इसे ईश्वर दत्त शक्ति का नाम दिया गया। विद्वानों का मानना है कि इस मे परिवर्तन किसी एक के करने से नही बल्कि सामाजिक रूप में ही हो सकता है। जब हम अन्य भाषाओं के शब्दो को अपने प्रयोग में लाना प्रारम्भ करते हैं तो समय स्थिति के हिसाब से उनमें परिवर्तन होते चले जाते हैं।

अंग्रेजी भाषा वर्तमान भारत की अपनी भाषा बनती जा रही है जिन अंग्रेजी शब्दों के अर्थ हम आमतौर पर बोल चाल में प्रयोग करते हैं वह हैरान कर सकते हैं।

पहले अंग्रेजी शब्द" सिली" का अर्थ अच्छा होता था लेकिन आज हम सिली शब्द का प्रयोग मूर्ख, लापरवाह या कम बुद्धि वाले के लिए करते हैं। 13वीं शताब्दी के बाद इसका अर्थ मासूम भी लिया जाने लगा और इसके पर्यायर जैसे नगण्य, कमजोर वगैरह सामने आने लगे। 16वीं शताब्दी तक आते आते इसका अर्थ इतना बदला कि वह **foolish, senseless** और stupid के तौर पर जाना जाने लगा।

शब्दों के अर्थ बदलने मे इतिहास का बड़ा हाथ होता है। यूं तो **writer** का अर्थ लेखक होता है किन्तु अंग्रेजों ने एक भवन को Writer's Building का नाम देकर जो कि कोलकाता में है इस शब्द का अर्थ ही बदल दिया। क्योंकि इस भवन में लेखक नहीं बल्कि बंगाल के मंत्री और अधिकारी बैठते थे। उन दिनो अंग्रेज़ जिन फ़ाइलो पर प्रशासनिक निर्णय करते थे, उन्हे लिखने वालों को **writers** कहा जाता था, जो उस भवन मे बैठते थे, वे **writers** आज कल क्लर्क या लिपिक कहलाते हैं।

इसी प्रकार सब भाषाओं में अनेक शब्द हैं जिनके अर्थ और कहने का ढंग समय के साथ बदला है। यहाँ तक कि गाँवों और शहरों के नाम भी समय के साथ परिवर्तित होते रहते हैं।

अंग्रेजी के जिस 'एक्स्पायर' शब्द का प्रयोग इसी भी दिवगत आत्मा के लिए होता है, उसे सुनकर यू.के. मे लोग हँसेगे। वहाँ पर इस शब्द का प्रयोग खाने पीने की वस्तुओं या दवाओं पर ही किया जाता है, जिस पर अंतिम तिथि लिखी हो। मनुष्य न तो कोई वस्तु है और न ही उस पर कोई अंतिम तिथि अंकित है, इसलिए हम देहांत, निधन जैसे शब्दों का ही प्रयोग करें।

एक और उदाहरण योग्य शब्द है "मैडम"।फ्रेंच भाषा में कोठे चलाने वाली बाई को मैडम कहा जाता था। लेकिन आज हम सम्मानित महिलाओं के लिए इस शब्द का प्रयोग करते हैं। इसी प्रकार' लोफ़र' उस युवक को कहते हैं जो पावरोटी के कारखाने में आटा गूंधने का काम करता था।

आज का युग कम्प्युटर और इंटरनेट का युग है। इसने तो अँग्रेजी के अनेक शब्दों का अर्थ ही बदल दिया है जैसे माऊस,जावा, लोटस, मोबाइल आदि ऐसे ही शब्द हैं जिनका प्रयोग कम्प्युटर में होता है और इनका अर्थ बदल जाता है।

शब्दों के अर्थ तभी बदलते हैं जब ये धीरे धीरे पूरे समाज पर अपनी पकड़ बना लेते हैं। गांवो में तो वर्तनी और उच्चारण तक अलग होता है। इसलिए बोलने वाले किस भी भाषा को अपनी समझ और सुविधा के साथ अपना बना लेते हैं और भाषा में परिवर्तन होता रहता है।

ज्योति अरोड़ा
प्राधयापिका

संक्षिप्त कार्यालय टिप्पणियां

I agree
मैं सहमत हूँ।
I disagree.
मैं असहमत हूँ।
Sanctioned
स्वीकृत |
Approved
अनुमोदित
As proposed
यथाप्रस्तावित
Please Speak
कृपया बात करें
Pleas discuss
कृपया चर्चा करें
Seen, thanks
देख लिया, धन्यवाद
Seen and returned
देखकर वापस किया जाता है।
Minister has seen
मंत्री जी ने देख लिया है।
For information only
केवल सूचना के लिए।
Submitted for orders
आदेशों के लिए प्रस्तुत है।
Submitted for consideration
विचारार्थ प्रस्तुत है।
Needful has been done
आवश्यक कार्रवाई कर दी गई है।
Draft reply is put up for approval
उत्तर का मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।

We have no comments to offer
हमें कोई टिप्पणी नहीं करनी है।
The proposal is quite in order.
यह प्रस्ताव बिल्कुल नियमानुकूल (ठीक) है
Administrative approval may be obtained.
प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए।
Await further report.
आगे और विवरण की प्रतीक्षा कीजिए।
Draft as directed by ... is submitted for approval.
... के निदेशानुसार मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।
Director General may please see for approval.
महानिदेशक कृपया अनुमोदन के लिए देखें।
The F.R. may please be seen for information
नई आवती सूचना के लिए देख लें।
Draft has been amended accordingly
मसौदा तदनुसार संशोधित कर दिया गया है।
The proposal is self-explanatory
प्रस्ताव अपने आप में स्पष्ट है।
No further action is called for
आगे कोई कार्रवाई अपेक्षित नहीं है।
This may please be treated as urgent
कृपया इसे आवश्यक समझें।
Return of the main file may be awaited
मुख्य मिसिल वापस आने की प्रतीक्षा की जाए।
Action may be taken as proposed.
यथाप्रस्तावित कार्रवाई की जाए।
Please prepare a precis of the case.
कृपया मामले का सार तैयार कीजिए
No assurance in the matter can be given at this stage
इस मामले में इस समय कोई आश्वासन नहीं दिया जा सकता।

गंड वाला कुर्ता

जब से हमने इस नई कालोनी में शिफ्ट किया है, तब से फूलमती ही हमारे घर में काम कर रही है। छुट्टियां लेकर ज्यादा परेशान भी नहीं करती। घर में चार रिश्तेदार मेहमान भी आ जाएं तो भी उसके चेहरे पर शिकन नहीं होती।

अपने आस-पड़ोस के बारे में मुझे ज्यादा जानकारी नहीं है। इस इतनी सी कि शर्मा जी बैंक में हैं, मिसिज रंधावा डॉक्टर हैं, हमारे साथ वाले वकील हैं। जैसा कालोनियों का चलन होता है दूसरों के घरों में ज्यादा आना जाना नहीं होता। सुबह शाम कोई सैर करता मिल जाए तो फार्मल नमस्ते, सति श्री अकाल, कैसे हैं? कभी आइए न घर हमें भी फुर्सत नहीं मिलती, हांजी हांजी आएंगे।

पड़ोस की थोड़ी बहुत जानकारी मुझे सामने वाली सरदारनी बलदेव कौर से ही मिलती है। सुबह-सुबह आवाज देगी, "भैन्जी त्यार हो गए दफतर नूं, तुहाडा तां पंगा ही ए, सवेरे उठ के शाम तक मशीन वांग चल सो चल। दोहां ने दफतर जो जाणा होया।"

बलदेव कौर दिल की अच्छी है, पर ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं, लेकिन दूसरों को हमेशा नसीहत देती रहेगी। "बहन जी, कपड़े ज़्यादा देर तक धूप में न पाया करो, रंग उड़ जांदा है, करेले कट के क्यों बणाउँदे हो? भर के बनाया करो, वावा खुले तेल च।" मैं उसकी बातों का कभी बुरा नहीं मनाती। फूलमती को भी उसने ही रखवाया था हमारे पास, सो हमें ज्यादा दिक्कत नहीं हुई काम वाली ढूंढने में और साथ ही नसीहत भी दे दी,"

"मैडम जी, निगरानी आप रखना इहनां लोकां दा दीन इमान नहीं हुंदा," सरदारनी आप भी फूलमती के सिर पर सवार रहती है, "फूलमती यह क्या है ? कपड़े से सावुन भी नहीं निकालती अच्छी तरह, दाल के निशान कौली पे वैसे ही लगे हुए हैं, काम करने की नियत नहीं है तो बता दे, हमारे जैसे लोग नहीं मिलने।"

निक्को अक्सर आती रहती है अपनी माँ के साथ, बड़ी गहरी खामोश आंखें, हाथों में रंग-विरंगी चूड़ियां, फूलों वाला कुर्ता जो या तो लम्बा होने की वजह से या फटा होने की वजह से नीचे गांठ लगाई रखती है। पांच- छः साल की निक्को से जैसे बचपन रूठ कर निकल गया हो, उसकी तीन बड़ी बहनें छोटे भाई की देख-रेख में लगी रहती हैं। सबसे छोटी निक्को, बेटों की जोड़ी मिलाने की जब स्कूल के लिए तैयार होते तो निक्को चुपचाप देखती रहती। कभी-कभी बच्चे पूछते, निक्को स्कूल जाएगी, दी सिर हिला कर न बोलती।

मुझे कभी निक्को या उसकी माँ से कोई शिकायत नहीं हुई। मजाल है कभी कोई चीज इधर से उधर हुई हो। मुझे उसकी वजह से कभी दफतर के लिए देरी नहीं हुई। सिर्फ एक दो बार छुट्टी की है। एक बार जब उसके पति रमियां को खेत में काम करते साँप इस गया था और एक बार उसके बेटे के मुंह में सिक्का फंस गया था। अपनी बिमारी की तो उसे कभी परवाह ही नहीं रही। जब किसी और को ही परवाह न हो उसकी तो बीमार पड़ने का भी क्या फायदा, अपना दुख-दर्द वो किसी को नहीं कहती।

आज सरदारनी ने शायद किसी शादी पर जाना था। काफी जल्दी उठ गए थे सारे। बलदेव कौर ने सोने के काफी ज़ेवर डाल रखे थे। उसने फूलमती को भी जल्दी लगा रखी थी।

"फूलमती, कुछ खाती-पीती नहीं तू, जल्दी-जल्दी हाथ चला, बारात जाने का वक्त हो गया, तू सुती एं कि जागदी एं।" जाने से पहले अपनी तैयारी पे आखरी जायजा लेने ड्रैसिंग टेबल के सामने खड़ी हुई, उसका गुलाबी रंग पीला हो गया, सोने का एक झुमका ही गायव था, इधर-उधर दूढा, सरदार और बच्चे भी इसी काम में मसरूफ हो गए। घर का कोना-कोना छान मारा लेकिन झुमका नदारद था। फूलमती भी डर गई। "फूलमती, तूने उठाया है तो दे दे", फूलमती अपने एक ही एक लड़के की कसम खा रही थी, निक्को की आंखें डर के मारे फैल रही थीं। वलदेव कौर ने निक्को को देखा और पूछा, "ये गंड वाले कुर्ते में क्या है, आ दिखा जन गंड वाला कुर्ता।" उसका झुमका चुनरी के गोटे में ही उलझा था जो एक झटके से उसके पांव में आ पड़ा। उधर गांठ खुलने से निक्को का कुती और लम्बा हो गया। सरदारनी थोड़ा कच्ची हो गई थी। "ये लड़कों जैसे कपड़े क्यों पहनती हो, तुझे सिमरन की फ्राक दूंगी, यह गंड वाला कुर्ता मत पहना कर।"
एक द्वार के बन्द होते ही दूसरा खुल जाता है।

- सुदेश कल्याण
दूरदर्शन जालन्धर

जालंधर
संयुक्त हिन्दी कार्यशाला
दिनांक-28-07-2023
नगर राजभाषा
कार्यान्वयन

दिनांक-28-07-2023

जालंधर
संयुक्त हिन्दी कार्यशाला
दिनांक-28-07-2023

अनुभूति

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जालन्धर।